

१३९
वसुधैव कुटुम्बकम्
जगत्सुखापन
विधि

3879

५३



शंख ग **॥** नमः अर्घ्य



पाञ्च



聖賢

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ सनम स्वर्णाद्यटस्त्रावनाविधिः ॥
॥ ॥ तथा दो जलक्षधनं ॥ चन्दनाभ ॥ जेनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दकदंरुट ॥
यस्वाहा ॥
निगिनाचमनं ॥
त्वानमः ॥

खगानमः॥ चन्द्रनाक्षत्रे॥ अक्षमूयानगिर्थावाहनं॥ त्रैकोङ्गं
 रगवनि॥ पूजा॥ त्रैउंसा ममगुलाय॥ ज्ञांमितिषदरुनपूजा॥ १५
 नूवं॥ गालययदिग्वन्धनं॥ रुट्४॥ ॥ गता अर्धकुलनआक्षा॥ त्रैवा
 गीधरिविद्महकाभनिधीमहि॥ तन्नभकिंप्रचोदयान्॥ ॥ गता
 दानपूजा॥ विघ्नाय॥ त्रैवदुकाय॥ त्रैमहालक्ष्मी॥ त्रैमहादेव
 ॐ गिचतुर्दिक्॥ दक्षिणसाखायां॥ त्रैविघ्नाय॥ वामसाखायां॥ त्रै

४५३

उपालाय॥ दक्षिणपार्श्वे॥ त्रैगङ्गाय॥ वामपार्श्वे॥ त्रैवदुकाय
 दहल्यो॥ त्रैदहल्ये॥ दहमी॥ त्रैवास्त्वाधिपगय॥ त्रैवदहल्ये
 दिक्षो॥ विघ्ननिवात्रयं॥ ॐ ममगुलाय नमः प्रयित्वा चन्द्रनक्ष
 त्रपदूर्वास्मादगलाजामफधामन्दिगान्मगुलाय नमः विक्ती
 र्ये॥ ॐ रुट्४॥ अपसर्पेनुयदतायदतायुविसंस्तिता॥ यदताविघ्न
 कर्त्तव्यस्तनभक्तुमिवाहूया॥ स्वाहा अमुत्राय रुट्४॥ दसदिगसंहात

विष्णुपिहाउठरालप॥ ॥ स्वाहा जमुनाय रुद्रं निमन्त्रणकृत्वा
 मूर्ध्नि नवं सदायः संखनहाय॥ १०८ ॥ कृत्तिका मूद्रान दिग्बन्ध
 नं॥ पूजनं॥ ॐ वामुपनूखाय ॥ ॐ गिरिहारी ॥ धनं॥ ॥ धनं
 मनः कृपणं॥ हर्मिस्तलं खनहाय रुद्र॥ ॥ गिरिकाशाय पूजा॥ ॐ
 क्रीं आश्विन भक्त्या दित्या ॥ धिया॥ ॐ पृथ्वी मनुस्य मनू ॥ रुद्रं
 सूर्यनकुन्दः कूर्मादिवगा आसनविनिर्थागः॥ ॐ पृथिवी ॥ वध

अतिनापराध॥ ॐ पृथिव्या धृता लोकादवी चं विना ॥ चन्द
 धनयमानि त्र्यं पवित्रं कनूवासनम्॥ नमस्त्वानं॥ ॥ हर्षे वाक्
 ॥ ॐ क्रीं क्रीं सः श्री सूर्याय अर्घ्यं ॥ पूषं ॥ ॥ गुनमगुल पूजा॥ जेगुन
 वं ॥ ॐ अखण्डमगुलं ति॥ मगुलं रूपं भिन्नसिद्धिर्षर्गं॥ ॥ नगा
 विनमस्त्वानं॥ गुंगुनूया ॥ दक्षिणं॥ गंगलक्ष्म्याय ॥ वामं॥ मूलं सुनख
 यं ॥ मध्यं॥ गालवयः दिग्बन्धनं रुद्र १०॥ हंसः धनमनुगमूलाध

नसथाहजीवाथगतयनावः सहस्रदलसुशिवशक्तिवनाप्रक्तं ॥ वामक
दिसयापपूषविक्तनायाया ॥ नैवामकजिस्त्रितं पापं पूषं कऊ
लप्ररम् ॥ वक्रहृत्तामिनस्त्रधस्त्रुतं ऊरुऊरुयं ॥ सूनापानंददियूर
कंशुनूकल्पकटिद्वयं ॥ गत्सं सग्नपदद्वंद्वमंगप्रत्तंगपारकंउपपा
टकनीमानंनकस्मृवितावनं ॥ खक्तवर्मधनं कूनं प्रापकूक्षोवि
विक्तय ॥ ॥ अवक्रासतिय ॥ यं १० ॥ नपाकिय ॥ नैव ॥ खवगिया ॥

वै१० ॥ ध्वरधक्रमाक्रमणप्राणायाममायपापपूषदग्निश्रवणलपा
धवसनीननीलमलश्रवणलप ॥ मननचन्द्रनादिनमानपूजनं ॥ साहं
ध्वमनुगमूलाधनसकृलुलनीथव२थानसग ॥ ॥ प्राणप्रप्रगिस्त्र
॥ नैज्जोकींक्रोयंनैलं वंषं संहं श्रीसनस्वप्नाप्राणं हंप्राणजीव
हनिष्ठसर्वद्वियातिवाद्यनयनलागव्यालप्राणं हागत्पसूखं
चिनंतिष्ठतुस्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ गतामूलकप्यादिन्यासः ॥ नैवस्य श्रीवागीध

नीमनुस्या॥वध॥**अ**ति॥**जी**ह्वहस्पगिऋषयः॥**मि**नसि॥**जे**विनाक्त
न्दसः॥**मू**ख॥**जे**वागीध्वनीदवगाथे॥**द**दय॥सकलविद्यापार
प्रार्थ॥**ज**पविनिथागः॥**न**मस्कानं॥॥**न**गः॥**क**नपठ॥**अ**न्यासः॥
स्वाहा॥**अ**मुत्राय॥**रू**ट॥**ला**हिता॥**जे**अङ्गुष्ठायां॥**जे**नमः॥**न**र्कनी
यां॥**स्वा**हा॥**जे**रगवनिमब्धमायां॥**व**षट्॥**व**द॥**र**भूनामिकायां॥**हं**॥
जेवाग्देवीकनी॥**क**यां॥**वो**षट्॥**जे**स्वाहा॥**अ**मुत्राय॥**रू**ट॥**जे**वददयादि

॥॥**न**गवर्णमनुन्यासः॥**वे**नमः॥**मि**नसि॥**दे**नमः॥**क**सपना॥**वे**नमः
मिखा॥**दे**नमः॥**क**सा॥**वो**॥**क**गु॥**गं**॥**म**न॥**वो**॥**क**॥**दि**॥**व**दन
नि॥**ना**लो॥**स्वो**॥**लि**॥**हं**॥**गु**॥॥**न**गावर्णमातृकान्यासः॥**जे**अ
स्यमातृकान्यासस्य॥**न**मस्कानं॥**जे**वह्माऋषयः॥**मि**नसि॥**जे**मथयी
कन्दसः॥**मू**ख॥**जे**मातृकासनस्वगीदवगाथे॥**द**दि॥**जे**वददयादि
या॥**लि**॥**जे**स्वभयः॥**अ**किथा॥**पा**दो॥**अ**वककीलकाय॥**स**

आत्मने॥ नूगलं निस्पृखवलाहगपचिह्नं वात्वं॥ त्रैसंक्षुक्तात्मने॥
 नूगलं निस्पृखवलाहगपचिह्नं वात्वं॥ त्रैहंप्राणात्मने॥ नूगलं निस्पृख
 वलाहगपचिह्नं वात्वं॥ त्रैलंजीवात्मने॥ नूगलं निस्पृखरूत्वं॥ त्रैउंपनमा
 त्मने॥ नूगलं निस्पृखरूत्वं॥ ॐ मिमांसावात्स्यासः॥ ॥ तनामूलवर्णुमा
 रूकापूठितनमांकावर्णुन्यासः॥ तनोक्तमः॥ अं त्रै अं॥ कपाल॥ अं
 रं अं॥ खालस॥ अंगं अं॥ ऊवमिखा॥ अं वं अं॥ खवमिखा॥ अं

गी अं॥ ऊवक्रसपन॥ अं वं अं॥ खवक्रसपन॥ अं दं अं॥ ऊवक्रा
 सधाल॥ अं वं अं॥ खवक्रासधाल॥ अं दं अं॥ ऊवक्राल॥ अं वा
 अं॥ खवक्राल॥ अंगं अं॥ र्थथूक्तुसि॥ अं दं अं॥ काथूक्तु
 सि॥ अं वी अं॥ र्थथूवा॥ अं स्वा अं॥ काथूवा॥ अं हा अं॥ भादस
 ॥ अं त्रै नभा रगवनी वद२ वा रदवी स्वाहा अं॥ ॐ त्रै नूक्रमन
 मांकावर्णुन्यासः॥ ॥ तनामूलऊष्मादिकनषुंगन्यासः॥

मन्त्रासं२

तनाथागपी ॥ न्यासः ॥ नदय ॥ जे आधान भकय ॥ मूल प्रकृति ॥ राजे
कुम्भोय ॥ जे अनकोय ॥ जे वनाहाय ॥ जे पृथिवी ॥ जे डीन समू
दाय ॥ जे ध्वगदी पाय ॥ जे मनिमलु पाय ॥ जे कलप्रवृत्ताय ॥ जे
मलिवदिकाय ॥ जे नक्तसिंहासनाय ॥ इति हदि ॥ जे धर्माय ॥ ज
वगल ॥ जे हानाय ॥ खवगल ॥ जे वनाहाय ॥ जवखल ॥ जे वध्वयो
य ॥ खखल ॥ जे अधर्माय ॥ मूला ॥ जे अहानाय ॥ नदि ॥ जे अ

हानाय ॥ जववक ॥ जे अनध्वयोय ॥ खववक ॥ पुनहदि ॥ जे अन
काय ॥ जे स्वन्दाय ॥ जे नालाय ॥ जे पद्माय ॥ जे अननन्दकन्दा
य ॥ जे सविन्नालाय ॥ जे सर्वगत्वात्मकपद्माय ॥ जे प्रहृतिमय
पत्रथा ॥ जे विकानमयकठनया ॥ जे पंचाक्षदण्डवीजाय ॥ का
काय ॥ जे सुसूर्यमलुलाय ॥ जे साममलुलाय ॥ जे न अग्निमलु
लाय ॥ जे संसत्ताय ॥ जे न नजस ॥ जे रंगमस ॥ जे आत्मन ॥

जैं जैं अनन्तनात्मनः॥ जैं प्रपन्नमात्मनः॥ जैं कीर्तनात्मनः॥ कथ
 न॥ जैं मन्त्रार्थः॥ जैं प्रकृत्यर्थः॥ जैं प्रणयार्थः॥ जैं विशयार्थः॥ ~~जैं विद्वत्पुत्रार्थः॥~~
 जैं धर्मार्थः॥ जैं स्मृत्यर्थः॥ जैं वृद्धार्थः॥ जैं विद्यार्थः॥ मन्त्रार्थः॥ वर्णपद्मासनाय
 ॥ ॐ निपीडयामः॥ ॥ मूलखण्डान्यासः॥ पूर्ववत्॥ मूलनित्तिध्याना
 पकन्यासः॥ ॥ ज्वं दहमयपीरु विंशत्यदिष्टवतान्॥ मनसा पा
 थादिचन्दनादिनिवदयित्वा भिनमि पूष्याशुलिदशात् मनसा॥

मूत्रादर्थयत्॥ ॥ प्राणायामः॥ जैं वृद्धार्थः॥ जैं ३०॥ ॥ ॐ निजुक्तार्थो
 गः॥ ॥ गतावेहिर्जोगार्थः॥ ॥ ॐ खण्डापनं॥ पूजा॥ वामविन्दुप्रिका
 शवृक्षवगुनसुविलिख्यगमिपूजयत्॥ जैं कीर्तनात्मनः॥ आध्यात्मिकदिष्टा
 मविमल॥ स्वाहा जम्बूकाय रुद्र॥ मधुलापनिनिधाय पूजयत्॥ जैं नवदि
 मधुलाय धूम्रादिदिष्टकलात्मनः॥ ॐ खण्डप्रख्यात्य॥ स्वाहा जम्बू
 काय रुद्र॥ मंचीसग॥ पूजा॥ जैं हं जूर्कमधुलायगपिन्दादिष्टाद

अकलात्मनः॥ मूलनलेखनाजं ध्वं चेतस्वाननः अक्षत ओषधी
न॥ पूजा॥ त्रैलोक्यं मम गुलाय अमृतादिषाज अकलात्मनः॥ अक्ष
अमृदयासूर्यमगुलायतिथिवाहनं॥ त्रैलोक्यं रक्षयति॥ नमः गुल
मुअक्षतग॥ मत्स्यमूदानमूलनविधिरक्षधनं॥ अथवा॥ १०॥ रक्षन्मूदावै
षज रक्षनपूजा॥ रक्षमूदा॥ सः॥ अथगुं० नं० ३॥ गालत्रयदिग्वन्ध
नं॥ रुद्र३॥ ॥ सर्वेसामाग्रीदवासादिंशरुद्र॥ रक्षजलन॥ ग

यपी॥ त्रैवागीध्वनीविष्महकामध्वनीधामनी॥ गन्धर्वकिः प्रथादया
ग॥ स्वाहा अमृताय रुद्र॥ पाशाचमनीयस्त्रानकलममधूपर्वपाशादि
रुद्रापनं॥ मालसाक्षीपातं च रक्षवत्॥ ॥ गतः पूजागुदिसर्वद
व्यादिनी रक्षधनं॥ रक्षजलनपादनं रुद्र॥ त्रैवन्दनाउतपूष्यं॥
रक्षधनं॥ यं३ नं३ वं३ मूलं३॥ रक्षन् गालत्रयदिग्वन्धनं रुद्र॥ ॥ गता
आत्मपूजा॥ धवद्वयकमलसङ्गष्टदवगाललपमानसीपूजा मन

नः यागपीठन्यासक्रमलदहः आसनध्यानावाहनपाशादिवन्दनादि
भ॥ विनस्य अलिमः थमदवरालप॥ अर्धलंखनथमभिनसहा
यः अमुखावागभयग्रावा॥ ॥ गता आत्मपूजा॥ आत्मयागपीठन्या
सक्रमलसनपूजयित्वा ध्यानं कृत्वा आवाहनमूडांदर्शयित्वा
पाशादिनापूजय॥ मूलं आत्मनपाशं २॥ त्रुवं ॥ ॐ दं सर्वं ॥ ॐ दमाच
मनीयं वं ॥ ॐ दमधूपकं ॥ ॐ दं स्नानीयं २॥ ॥ मूलं आत्मनवन्दनं २

मूलं आत्मन अद्वयं २॥ मूलं आत्मन सिद्धनं २॥ मूलं आत्मन पूषं २॥ मूलं वि
नस्य अलिमः ॥ ३॥ मूलं आत्मन पापू ३॥ थमदवरास्वरूपरालपाव
आनन्दमयश्यावदवीपूजायाय॥ आत्मन सर्वाङ्गमागृकान्यासक्र
मलमागृकासंपूटितनमूलनपूजयदिग्यात्मापूजा॥ गता संकल्प॥
वाक्य॥ ॥ कृताजलिंवध्वगलपनिप्रार्थय॥ ॥ अरिपित्तार्थसिद्ध्यर्थ
पूजितायः सुरासूतः ॥ सर्वविघ्नच्छिदरसौ गङ्गाधिपतयनमः ॥ गता

कूटानन ३ अथविद्यागमपसिमंत्रः॥ॐ ह्रीं क्लीं ग्लीं गं

विघ्नहान्तरर्थः गल्लक्षपूजाविधिवत्॥ विघ्नवलिः॥ ॐ सर्वविघ्नहन्तः
सर्वदुर्गल्लोवलिंगं कुरु स्वाहा॥ गजमूढां दधयन्तु॥ ॥ गुनपूजा॥
ततामगुपरेषाधयथा॥ प्रादुर्गीपातु कुलनायक॥ ॐ आपाहि
हामथाशुवस्तानः ३ दुर्कदधन॥ महर्गल्लयचक्षुषः॥ ॐ आवः शि
वतमानमगस्त्यजयगहनउसगीनिवमातनः॥ तस्माद्भूतजमास
वायस्यकयायतिवथः आपाजनयथावा॥ ॐ अपविग्रपविष्टगि॥

कूटानन ३ अथविद्यागमपसिमंत्रः॥ॐ ह्रीं क्लीं ग्लीं गं

त्रैलोक्यभूमाय रुद्र॥ ॥ मगुपंपूनयित्वा चन्दनादिरिः पूजयन्तु॥ ॥
कूटाननपुष्पभूतभूमिरेषाधयन्तु॥ ॐ महिओपृथिवीचनइवमंयज
मितृकगाः॥ पितृगान्नारनीमहि॥ त्रैलोक्यविशारवदमदूयुट
स्वाहा॥ गालययदिग्वन्धनं कृत्वा पूजयन्तु॥ ॐ वामुपेनृषाय
त्रैभूतलः विरलः सूरलः महारलः गलारलः नसातलः पातालः
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहापाप्मा॥ ३॥ ॥ ततापीतवृक्षुन अष्टदलपद्मं

त्रैलोक्यभूमाय रुद्र॥ ॥ मगुपंपूनयित्वा चन्दनादिरिः पूजयन्तु॥ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहापाप्मा॥ ३॥ ॥ ततापीतवृक्षुन अष्टदलपद्मं

कि०

वा. सर्वभा एडम्वा यन्तु न्वा निरुवा ॥ ॐ पद्मानन पद्म उरु पद्मा कि
पद्म समुव ॥ तन्मे एउ सिपद्मा तेन मोखं लभाम्पहम् ॥ नै ह दया
यनमः ॥ ॥ कर्तुका मरुध सार्त्ती धनं निधाय ॥ ॐ धन्यमसि ॥
अथवा ॥ ॐ वीहयधमा ॥ नै ह दयाय २ ॥ ॥ तद्वपनि तल्लं पू
निधाय ॥ ॐ प्रजापत नि ॥ नै ह दयाय २ ॥ ॥ पुनर्दलनोक्ती
य ॥ मूलं ॥ ॥ चन्दना दत्त पूष्प कूठ संयुक्तो धनि निधाय तसि

ॐ पवित्रम् ॥ १ ॥

पूजयता ॥ ॥ नै आधनम कथरा ॥ नै मूलप कथरा ॥ नै म लु काये रा
नै कर्मोये रा ॥ नै रमणाय रा ॥ नै अनन्ताय रा ॥ नै वनो हाय रा ॥ नै पृथिवी
रा ॥ नै शीत समुद्राय रा ॥ नै रवगदी पाय रा ॥ नै मनि म लु पाय रा ॥ नै
कल्प द्वाय रा ॥ नै मनि व दि काये रा ॥ नै नल सिंह स नाये रा ॥ ॥
नै धर्मोय रा ॥ नै क्लानाय रा ॥ नै वे ना क्लाय रा ॥ नै नै धर्योय रा ॥ नै अ
धर्मोय रा ॥ नै अक्लानाय रा ॥ नै अवे ना क्लाय रा ॥ नै अने धर्योय रा

नै अने धर्योय रा २

जेँ ज्ञान नन्द क न्याय रा जेँ संविन्ना बाय रा जेँ सर्वगत्वात्मक पणाय रा
 जेँ विकास मय क क्षमाय रा जेँ पंचाक्षरु वी जाय क क्षु काये रा
 जेँ सूर्य मणु लाय रा जेँ साम मणु लाय रा जेँ अग्नि मणु लाय रा
 जेँ संसगा गुणाय रा जेँ नन आगुणाय रा जेँ गंग मा गुणाय रा
 जेँ आँ आत्मन रा जेँ अँ अकनात्मन रा जेँ पँ पनमात्मन रा जेँ कीँ
 क्षानात्मन रा ॥ कक्षन पी ॥ कि पूजा ॥ जेँ मक्षाय रा जेँ प्रक्षाय रा

जेँ प्रणय रा जेँ विशाय रा जेँ धृत्य रा जेँ स्मृत्य रा जेँ वृद्धि रा जेँ विद्य
 ४४४ रा जेँ वर्ण पद्मासनाय रा मध्य ॥ जेँ वेनदाय रा जेँ अर्यदा
 य रा ॥ गगाह मा दिन विग क्क मं पंच गायन पंचा मृगान प्रका
 ल्य ॥ जेँ स्वाह अस्माय रुद्र ॥ ३ ॥ ॥ गगः गंध चन्दना गुनू कर्पू म
 गल पथ म ॥ मूलन गंध चन्दना गुनू कर्पू नंधू पथ ॥ कुमानी म
 गग चठ वर्य म ॥ जेँ नदाहन ॥ ॥ हग न्धेन चठल

पयित्वा सुगन्धपुष्पादिर्बोद्धगनाञ्चयित्वा ॥ मन्त्रं पंच नव
 नत्वा घटं दधे निधाय ॥ ॥ नमः सुमंजस वलाय नथा मधुपात्र
 नमं धूपयित्वा नानावाद्यादिः वेदधा खयित्वा घटं स्थापयत्
 ॥ ॐ आ जि ह्रु कम कात्वा हि सै ह्वि न्यवः ॥ पून नू ज्ञे निव र्द्ध स्व सा
 नः ॥ सहस्रं धुक्ता नू धना पय स्वमीः पून म्मे वि शमा द्रु यि ॥
 ॐ ॐ ॐ वा ए द व्याः घटं स्थापयामि ॥ ॥ नमो नमो नमो नमो नमो

वेद
 कर्पूरं गन्धपुष्पसूवासिर्मेनात्मारिन्नं प्रगित्वा मन्त्रं ॥ कान्तं ग द
 त्मूलं पयित्वा घटं पून यत्नं यथा ॥ ॐ व नू ण स्य कं ए न म सि व न
 ण स्य स्वं ए स र्जनी स्था व नू ण स्य ऋ ग स द न म सि व नू ण स्य ऋ ग
 स द न म सि व नू ण स्य ऋ ग स द न मा सी द ॥ नृं कं तं हं सं षं भं वं लं नं यं
 मं रं वं रं पं नं धं दं थं गं लं रं उं णं णं मं जं कं चं ढं घं गं खं कं भूः भू
 भो भो नृं नृं णं णं ऋं ऋं उं उं षं षं भूं भूं नमः सुखा वी द म्वा द व र गि

वगएभाननेनमः॥ ॥ गन्धं किं पञ्चाङ्गं गन्धदानादुनाधर्मानि
त्यपुस्तकनिष्पत्ती मूर्च्छनी सर्वरुगानां निहापक्य श्रियम्
॥ नैव देयाय ॥ ॥ प्रोक्तं ॥ ॐ याः सुलेनी ॥ नैव हा जमुनाय रु
द्र ॥ ॥ ओषधी ॥ ॐ वाः ॥ ओषधी पूर्वजा मादवत्यन्ति पूगमपूना ॥
मननवयुक्तमहदशगंधमानि सप्त च ॥ वं ॥ ॥ यवानां ॥ ॐ
ओषधयः समवदन्त सामन सहना ह्यस्य सौ कुरु ॥ गिवोक्त

वस्तुना उन्मापानयामसि ॥ नैव देयाय ॥ ॥ इवो ॥ ॐ काशु
क्लाशु स्युना हन्ति पनूपः पनूपस्य नि ॥ यवाना इवो प्रगनु
सहस्रवर्गनव ॥ नैव नमः शिनस ॥ ॥ ॥ अदृगं ॥ ॐ अदृगं
मीमदं ॥ ॥ पंचपञ्चव ॥ कीनद्रुमकखाथन
पलासत्वग्रवगवाः ॥ ॐ अदृगं स्थवी निषादनम्य ॥ ॥ इवो व
सगिस्तुता ॥ ॥ गणराज ॥ ॐ क्लितासथयस्तनवथपनूपम ॥ नैव

एगवन्ति शिखायेव प्रदू॥ ॥ सफमृगिका॥ ॐ स्माना पृथिविने
 एवान्ते कनानि वधनः॥ यच्छानः॥ अर्मे सप्रथा॥ ॐ वेदं कवचाङ्क॥
 अष्टमगन्ध॥ ॥ ॐ वाग्देवी ननु गुर्याय वीषदू॥ ॥
 रुत॥ याः रु विनीर्याः ॥ अरुता ॥ अ पूष्यायाश्च पूषिणी॥ इह स्य
 तिः प्रगात्माना मूचन्त्य ॥ हसः॥ ॥ पंचनलन
 वनत्तं॥ ॐ पत्रिवाजयतिः कविननिहव्यान्प्रकुमीत॥ दधेद

सु३

त्तानि दामरव॥ ॐ मूर्त्तं मूर्त्तं मूर्त्तं मूर्त्तं पञ्चनलन्याशा॥ ॥ हिनर्ष॥ ॐ
 हिनर्षगर्वः समवत्तना ॥ अहं स्रजः पत्रिवाज आसीत् सदा
 धनः पृथिवीशा मूर्त्तमाङ्कमेदवाय हविषा विधेम॥
 वम्॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीतः ॥ अगात्सु ॥ उक्क्यान् एव निजाय
 मानः॥ गन्धीना स कवयः ॥ उन्नयन्तः सारस्वामन साय वयन्तः॥ ॐ वे
 दवदकवचायङ्क॥ ॥ अर्खनपूषु ॥ इत्या विलादयन्त॥ ॥ न

नः कलामावा कपूजयन् ॥ नैव क्रद्दक्ष कलात्मनः ॥ नैव वेदा
दक्ष कलाय ॥ नैव सामाय धातुक्ष कलाय ॥ नैव पंचाक्ष कला
य ॥ ॥ रुता उगपूर्वपाणिधाय ॥ ॐ पूर्णदर्विपनापन
सुपूर्णपूननापन ॥ वभ्रुव विक्रीणावहा ॐ प्रमूर्क ॥ ६४
गक्रता ॥ नैव नमः क्षिप्रस्त्वाहा ॥ ॥ गदूपनिवनूषमावाक
पूजयन् ॥ ॐ गत्वा मि ॥ नैव वनूषाय ॐ हा गक्रता क्रुति ॥

नैव वनूषाय रुता नमः गंधपुष्पधूपदीपमेव दद्यादिरिचैव नूषसां
ः सपनिवारायः प्रीयता नमः ॥ ॥ गतः कलसंस्पृष्टानीथान्वावा
हनम् ॥ ॐ सर्वे समूहाः सत्रितस्तीर्थनिजलदानदा ॥ आयातु मम
साक्षानां इति न कुर्यात्कानका ॥ ॥ गतः कलसंस्पृष्टानीथान्वावा
॥ नैव कलसंस्पृष्टानीथान्वावा ॥ मूलतस्त्यस्ति
गावन्ताः मरुत्मा रगताः ॥ कूकोरुसागनां सफः सफदीपा

वसुंधराः॥सुरश्वदाथयशर्वदःसामवदाकथर्वतः॥अरुद्धश्च
 सहिगासर्वकलक्षणसमाधिना॥गन्धपूष्पादमनकनाश्रुतिं
 वध्याकलसंप्रार्थयन्॥नेदवदानवसम्बादमथमानेमहादधिर
 उरुनासिगदाकुमुविधनाविष्णुनास्वयम्॥त्वत्त्वयिसर्वगीर्था
 निदवाःसर्वत्वस्थिना॥त्वयिसर्वोक्तिरुतानि त्वप्राप्तप्रतिष्ठि
 ना॥शिवस्वयंत्वमवासि विष्णुस्त्वत्प्रप्रापतिः॥आदिप्रा

वसवानूपाविष्टेदवाःसपेरुकां॥त्वयिनिष्ठनिसर्वप्रियतः
 कामरुतप्रदः॥त्वत्प्रसादादिमां पूजां करुमीहमहाह्वो॥सानिध
 क्कुरुमयवीःप्रसन्नारवसर्वदा॥अंगिप्रार्थनां कृत्वा गत्कलक्षणप्रतिम
 नूकर्तुं कायां सनस्वतीध्यात्वा आवाहयन्॥ॐ पावकानः सनस्वती
 स्प्रमत्तस्य मधुच्छन्दस्य पिर्गयत्री कन्दामहासनद्वयताक्तीं वीं ॐ
 सनस्वती आवाहन पूजन विनिर्थागः॥ॐ पावकानः सनस्वती वा

स्वती २

ऊरिर्वाजिनीवनिभियज्ञं वष्टुर्धियावसू॥ ज्ञेयं न सस्वगीद्वीष्टं
 गच्छ२००॥ हनिष्ठ२॥ ज्ञेयं शुद्धं स्वच्छं विलं प्रमाल्यवसनां श्रीगोशुष
 ॥ शुभालं॥ व्याख्यामकरुणं सुखाय कलं विद्याचहस्ताम्वुजः॥
 विशाखा कमलासनां कूचननां वासवगोसुस्मिता॥ वन्द्यवाग्विर
 वपदां प्रिनयनं सोराग्यसपत्नी॥ प्रगिविलासनमूलनाक्षान्
 नभतां॥ अपित्वा॥ कुरुकोमयूरमनवष्टुयित्वा प्राणप्रगिष्ठं कू

र्यागा॥ ज्ञेयं सुप्रप्राणप्रगिष्ठमनुस्यवक्षविष्णुमहर्षना
 प्रयागयगीच्छन्दः प्राणशक्तिद्वरात्र्यावीजं श्रीशक्तिज्जोकीलकंपारा
 कर्षणविनिर्थागः॥ ॥ प्राणशक्तिध्यानं॥ ज्ञेयं कामुभिष्टपागात्रसद
 नृगसनालाधिरुजकनाकुः॥ पार्श्वकाष्टाठमिद्वरुवगुणगलमप्यकू
 र्णपाठनागा॥ विशाखासुच्छपालं चिनयननसिगापीतवक्षानूहाया
 दवीवालाकूवर्णावगुसूरवकनीप्रानशक्तिंपनाशः॥ ००॥ निध्यात्वा

कुं अनवामकना रागधवा स्य भन्या प्रनिष्ठा ॥ त्रैं औं कीं क्रौं यं नं लं वं षं
 षं संहं लं दं हं सः श्री वा र्गदव्याः प्रा ण वू ह प्रा णः त्रैं औं कीं क्रौं यं नं लं वं
 षं षं संहं लं दं हं सः श्री वा र्गदव्याः जी व वू ह निष्ठः त्रैं औं कीं क्रौं यं नं
 लं वं षं षं संहं लं दं हं सः सा हं श्री वा र्गदव्याः सर्वं न्द्रियानि त्रैं औं कीं
 क्रौं यं नं लं वं षं षं संहं लं दं हं सः सा हं श्री वा र्गदव्याः वा द्य न व द्
 आ य द्या ण प्रा ण वू ह ग न्य सू र्वे चिनं निष्ठु कु स्वा हा ॥ ३ ॥

एतन्मन्त्रं धनं ॥ नैऋतं कं खं गं घं ङं ॥ अं हं दं या य ॥ नैऋतं षं च ॥ ५७ ॥
 सिनमस्वाहा ॥ नैऋतं उं टं ॥ उं टं ङं ॥ उं षि स्वा ये व षट् ॥ नैऋतं थं दं धनं ॥
 ववायङ् ॥ नैऋतं अं पं रूं वं मं ॥ उं नं ॥ नृ या य को षट् ॥ नैऋतं जूं यं नं लं वं ॥ षं षं सं
 दं ॥ अं ॥ अं म्नाय रुट् ॥ मूलन ॥ ॥ धनं ॥ अं गुणं ॥ गालं यदिव
 न्यनं ॥ ॥ गतः घटं मूलनं कल्पं ॥ खिनी कृयायां वा एदवी म्
 मिं कल्पयित्वा आवाहनं ॥ नैऋतं मं स्रु सर्वं दवानां वनदासि सनत्
 नी ॥ नैऋतं हिकलं ॥ वाजनिष्ठं गं पूज्या म्पहम् ॥ ॥ आसनं ॥ मूलं

वारद्व्यां दमासनं २॥ ॥ प्राभायाम् मूलकनषङ्गान्यासं कृ
 त्वा ॥ इत्थं कृतं पूष्यनक्षत्रे मूलास्वध्वध्वयै ॥ ॥ ध्यानं ॥ जेष्ठ
 धां ध्वक्क विलम्बति ॥ पूर्ववत् ॥ जेष्ठानपूष्यं नमः ॥ ॥ ततो आवाह
 नं ॥ जेष्ठं गवति वारद्वीं हगच्छ २ हनिष्ठ २ हसन्निहिता
 एव २ भूयाधिष्ठानं कृतं २ मम पूजा गृहात् २ ॥ पूर्ववत् जीवन्त्या
 संवास्वत्यं वा प्रागप्रतिष्ठां कुर्याद्यथा ॥ जेष्ठं ज्यैष्ठ्यं वा वारद्व्यां सर्वं त्रियं

[illegible]

॥ २१ ॥ श्रीसूक्तम् ॥

ॐ दमाचमनीयं वं ॥ ॥ मधूपर्व ॥ मूलं श्रीवाग्देवी ॐ दं मधूपर्व
स्वधा ॥ ॥ स्नानं ॥ मूलं श्रीवाग्देवी ॐ दं स्नानीय ॥ गंगा चन्दनादि ॥
गंध चन्दनं ॥ मूलं ॐ दं गन्ध चन्दनं श्रीवाग्देवी नमः ॥ ॥ अनूप
नं ॥ मूलं ॐ दं मनूपनं श्रीवाग्देवी ॥ ॥ अक्षतं ॥ मूलं ॐ दं मकु
त श्रीवाग्देवी ॥ ॥ सिद्धं ॥ मूलं ॐ दं सिद्धं श्रीवाग्देवी ॥ ॥
पूषं ॥ मूलं ॐ दं पूषं श्रीवाग्देवी ॥ ॥ नाना पूषानि च ॥ ॥ धूपं

मूलं ॐ दं धूपं श्रीवाग्देवी ॥ ॥ दीपं ॥ मूलं ॐ दं दीपं श्रीवाग्देवी ॥
॥ ॥ रुतं ॥ मूलं ॐ दं रुतं श्रीवाग्देवी ॥ ॥ नेवशं ॥ मूलं ॐ दं नेव
शं श्रीवाग्देवी ॥ ॥ अचमनं ॥ मूलं ॐ दं माचमनं श्रीवाग्देवी ॥
गया श्रुति ॥ मूलं श्रीवाग्देवी श्रीपापू ॥ ३ ॥ ॥ गता मार्गा कुर्वे सं
पूठिर्गः न्यासकर्म मूलनार्चयित्वा षडङ्गादिः अङ्गादिकां
मानय कर्म प्रपूजयन् ॥ ॥ नगां आदिषु अङ्गुः अङ्गदवतादि

ध्यानवागनपूजय ॥ ॥ ततः पूजनं ॥ नैगुषानायै ॥ नैस्तुठिकायै ॥
॥ नैष्णामायै ॥ नैनीलायै ॥ नैस्तुष्टायै ॥ नैजुनूषायै ॥ नैजुर्विषायै
नमः ॥ नैवनदायै ॥ नैजुरयधानिष्ठायै ॥ ॥ मूलं प्रियां कलि ॥ ॥
अथ वाग्दद्या विष्णोपचात्रपूजय ॥ पाशादिः वन्दनादिः
नापूजय यस्तु लिपयन्तं ॥ ॥ पद्मः पुस्तकः कलमः अक्षमालाः
वनः प्रगाणि मूत्रान्दक्षयन् ॥ ॥ ततः पवित्रानपूजा ॥ नैवाग्दद्याः

पवित्रानास्तपूजयामि आङ्गद हिंस्रमस्व ॥ कर्णः पञ्चः पुनपूजा
॥ अक्षदल ॥ नैयोगायै ॥ नैस्तुष्टायै ॥ नैविमलायै ॥ नैस्तुष्टाना
यै ॥ नैवृष्टायै ॥ नैस्तुष्टायै ॥ ॐ मन्त्रायै ॥ नैपुष्टायै ॥ ॥ दलाय
॥ नैवृष्टायै ॥ नैमहोष्ठायै ॥ नैकोमायै ॥ नैवृष्टायै ॥ नैवामा
यै ॥ नैवृष्टायै ॥ नैवामुष्टायै ॥ नैमहलक्ष्म्यै ॥ ॥ दाना ॥
नैवृष्टायै ॥ नैवृष्टायै ॥ नैमृष्टायै ॥ नैमृष्टायै ॥ नैमृष्टायै ॥

ॐ अक्षय्याय ॥ ३ ॥

त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥
त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥ त्रैलोक्यनाथाय ॥

सांगः सायुधः स्वाहनाः सानुवर्तयः ॥ श्रीवागीश्वरीदेवीपापू ॥ ॥
लनगयाकुलि ॥ ॥ पुनः चतुर्दशकृतमग्न्याकुलि ॥ त्रैपद्मासनाय ॥
ॐ श्रीवन्द्यवाग्वादिनीस्वाहा ॐ श्रीवागीश्वरीपापू ॥ ३ ॥ ॥ गतादव्या
पनिनृपं महाविष्णुपूजय ॥ ॐ गनूजसनाय ॥ ययांजलि ॥ ॐ नमानारा
यक्षाय ॥ ३ ॥ ॥ वाभलक्ष्मीपूजय ॥ ययांजलि ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी
॥ ३ ॥ ॥ ॐ गिसनस्वरीरूपापनं ॥ ॥ गदूपनिकलसमध्ववसना
यष्टपनिवानसहिमं नमिषीमि समन्त्रिणं कामदवंधयथ ॥ ॥ ॐ

नलसन्दाहसंरुकिनिटाक्षलमस्तकः॥मासिकसकनाहासि
कृष्णलक्ष्यरुकिः॥अनन्तार्चनशीर्षाक्षसमानमूरवमशुलः॥मासिक
खलुप्रमददन्तमशुलमशुलः॥विशाललावनयूगः॥असकृद्वि
कभकः॥कक्षनाक्षदकयूनमूकाक्षनविनाजितः॥चलकृष्णल
पिस्पष्टकपालक्षयनाजितः॥विहसंक्षपत्रागोनस्तथासर्वोक्ष
धनः॥पौष्पवापक्षनवामदकिपंचसायकान्दधनधियुव

सनामश्रीननचिगांधिकः॥चूगकाकिननूक्षनवसकमलया
निलेः॥सव्यमानमूदाक्षकिर्क्ष्यालिङ्गविग्रहः॥ह्रस्वामृग
सैःसक्तिविरक्तवनः॥ॐद्विधोहिमदनाभ्यातव्यःसिद्धि
क्षितिः॥निलात्पलदलक्षमाप्रीतिप्रोक्तवकामिनी॥समसम
नन्यासैरूक्षयिसमाकृतिविनक्षपूर्णिमापूर्वचन्द्रविम्ब
मानन॥विशालरूक्षनाजीवदलक्षायनक्ष॥विलसदल

गठकृष्णवर्णरत्नमालासन्नुद्धर्मिज्ञनसगर्विगा
विभालजघनाशरणभूतिश्रीलोकटिल्लल॥कलभनपीवत्रातुद्व
काजयुगलाचिग॥नलमंजीनकपूनककनाददल्ललिग॥किं
किनीहामूकूटमूदिकावलयाचिग॥बेलाबसावसाच्ययो
वनामादगर्विग॥सिंहासनसमावृष्टविचित्रविविधाम्बन॥
ल्लच्छीतांशुकलसमच्छविललाटक॥विचित्रमाल्यललिग

वज्रवटगलेर्वगा॥गोनांगल्लारिकम्भूनिक्कूमागनूचिगव॥
सूप्तिगाज्ञासिवदनवक्षद्वानकनल॥लुजाय्याधनयन्या
वनालयमनूदमम॥उपाधमानकामस्यपनिवार्नःसमनगः
॥मलयाचलवागनेपिकेःसूनपायिनिः॥ध्यायल्लंद्रीनिन
नीसर्वकामसमृद्धय॥ॐनिध्यात्वा॥ॐकामंकामधूधधूद
मिग्रायवनूलायच॥ॐआयाधियापूपाप्रजायउउपधीत्यः

जयम॥ धनूषप्रानपकामस्तु॥ गिधत्वनसर्वः सर्वप्रदिल॥
 जयम॥ ॐ पुष्पधनूः हागच्छति॥ ॥ वायव्यां विकाराग॥ ॐ वि
 किनिद्विद्विलाहितनमस्तु॥ भुक्तुर्गवः॥ यास्तुहस्तुहस्तया
 न्दमस्तुनिवपक्तुगाः॥ ॐ विकानाः हागच्छति॥ ॥ उत्तम
 मलयानिलंम॥ ॐ नियुत्वान्वायवागस्तुयुक्ताः ५ भुक्ताः ५ भुक्ताः
 मिग॥ गन्तासिस्तुन्वागच्छहम्॥ ॐ मलयानिलं हागच्छति

कि३
 ॥ ॐ नकाकिलम॥ ॐ विरुः आदिग्यानामृष्टाचृणीवा
 न्वाध्रीनमस्तुमग्धाः ५ भूतन्वायस्तुमनानूतुप्रदः कयिः कूट
 नूर्ध्वो हस्तवाजिमाक्षमायपिकः॥ ॐ काकिलाः हागच्छति॥
 ॥ ॐ पक्षिपत्रिवानानावाकस्थापयित्वा॥ ॥ मधुमाधवीदद
 वामथास्थायेथ॥ ॐ मधुध्वमाधववध्ववास्तुनिवावृत्तुः ५
 ग्ननः ॥ ॐ धामिकल्लानाद्यावापृथिवीकल्पनामापः ५

षधयः कल्पमामनयः पृथग्ममर्चयस्वनाः ॥ षः अर्चयः
समनमाननायावापृथिवीर्भूम् ॥ वासन्ति काहृदृ २ अर्चिकल्प
माना इत्यमिवदवाऽअर्चिसत्त्विसैकुनयादवमयादितस्व
द्ववसीदगम् ॥ ॐ मधूमाधवाविहागकुर्त हागर्त हागकुर्त ति
॥ ॥ तगा ॐ को ॥ ॐ यदृक्षेषूराधिपुशनीलपीवाविलोहिता
॥ तगा ॥ सहस्रयोजनवधन्वानितनमसि ॥ ॐ अर्चयः कर्तुं हाग

कुनि ॥ ॥ कालं ॥ ॐ कार्ष्णिनसि समूहस्य त्वारिविद्या उन्नया
मि ॥ समाधाऽअर्चिरम्मयतः समाधधीरिनाधधी ॥ ॐ काल
ॐ हागकुनि ॥ ॥ ॐ वाहनस्थापनं कृत्वा स्वस्वमकुलपूष्या
अर्चिं क्षिपन्मन्त्रायथा ॥ कामस्य ॥ ॐ कामध्वनाय विद्महे का
मदवाय धीमेहि ॥ तन्न कामप्रदायान् ॥ ॐ क्लीं कामदवाय
नमः ॥ ॐ क्लीं नमः ॥ ॐ प्रीत्यै ॥ ॐ नेमास्तु पंचवागभय

जगदाज्ञादकानि॥ मन्मथयजगन्मन्मथनिप्रिनिप्रियायना॥
 ॥ ॐ वसुक्तानिममुर्यं वदगुल्लमलगाध्रय॥ सहस्रमूरवसंवा
 सकामदूतायवे॥ ॥ ॐ चूनांकुनाय॥ ॥ ॐ पंचवारं गला
 नमः॥ ॐ प्रमनखा॥ ॐ पूष्पवापाय॥ ॐ विकानखा॥
 ॥ ॐ मलयानिलखा॥ ॐ कोकिलखा नमः॥ ॐ मधवेनमः
 ॥ ॐ माधवाय॥ ॐ अरुणा कव्यविखा कव्यकाममुनी साक

नाथना॥ ॥ ॐ कार्दंहनमनिप्रमानन्दश्चरुजनस्वभा॥ ॥ ॐ लु
 धादिकालपर्यन्तं कालरूपी महाबलः॥ कालर्तुवयः सर्व
 तर्पका लोत्तमन॥ ॥ गतावलिप्रदानं॥ वीघ्रवलि॥ दानद्वेगा
 यः वलि॥ मूलवलि॥ लक्ष्मीवलि॥ विष्णुवलि॥ कामध्वनीदेवव
 लि॥ समस्तिवलि॥ ॥ मालसावलिमविस्मं हामयाय वलिलि
 पावियशला॥ ॥ चन्दनादिन॥ वदनवा॥ ॐ लोकनवा॥ प्र

गिराक्तं ॥ ॥ उपमा सा ता पूजा ॥ अर्धजलनाथ ॥ रुद्र ॥ नैव न्य
 ना उत पूषं २ ॥ पूजा ॥ नैजी अरु मा लाये २ ॥ ॥ उप १०८ ॥ १०००८
 ॥ उपसमर्पणं ॥ नैगुक्षगिगुक्ष ॥ मफगि ॥ नै ०० दं उपंगुहा
 हा ॥ ॥ मधुलसाय ॥ नै अखगुमगुलति ॥ नै अंगर्या ॥ धममगि
 ॥ अथ सनत्तगीसु काम ॥ ॐ ०० यगम ॥ कवचादि ० का सा
 लयाय ॥ गतः कामदवयो ॥ ॐ नमस्तु सर्वसिद्धीनां ॥ गवप्रम

थात्मन ॥ सूनासूनर्षिमनूजनापी विरूपमाथिनि ॥ १ ॥ वद्वपू
 यमहा राग उगदानन्ददायक ॥ नमिपी निप्राणनाथनपा
 विद्यविधायक ॥ २ ॥ ०० दियार्ण प्रमथनकलिपापसूहत्सम
 न ॥ धर्म ० र्थे र्थविद्वषी विजगद्वषकानक ॥ ३ ॥ यथा ० क्तिय
 था ज्ञानं मया पूजा कर्तव ॥ त्वं गयगुष्टमदन ० कित्या सहितः
 सदा ॥ उपनाथ ॥ अगुगन्धादि ॥ ॥ गाम्बूलददि ॥ नै न्यूनाधि
 वाक्का ॥

कमिदकर्मयदिक्रिद्रमक्रिद्रकम्॥ कून्संपूर्णगान्धवीद
दिभंप्रतिशेक्कगाम्॥ ॥ गतावसक्तनागन ॥ कद्वयं पठे
नू॥ पद्मापयाधनगि॥ वसक्तवासकीति॥ ललितलवद्रलति
गीतमकंगायगी॥ गदनू॥ दनविदनतिष्ठाक॥ ॥ गन्धपू
ष्पादुतान्यादाय॥ दग्धसंजीवितायदत्तं नृक्षलट्याल
ना॥ नथसंस्तानदग्धं सार्वज्ञीवयस्यपद ॥ ॥ ॥ दवा
त नृपकनमस्तु ॥ ॥

शीर्षोद॥ जैत्रकानकगि॥ ज्ञात्माशीर्षोदं॥ जैत्रभूषपूर्वति॥ ॥
गताऽर्धजलनासिश्चनं॥ चन्द्रनादितिलकंकुर्वीत॥ मरुतस्य
पदवस्तुपूष्पज्ञात्मानस्तपनं॥ न्यासः॥ ० ॥ अथवसंतातीनवि
सर्जनं॥ ॐ मनुहीनक्रियाहीनं. एकिहीनं सूनध्वी॥ यत्तुजिग
॥ मयारक्षा यन्निष्कर्णदमुमं॥ ॐ उगिष्टवस्तुस्यनदवयक्त
त्वस्तुमहे॥ उपप्रयक्तमनूतः सुदानवः॥ ॐ नृप्रासुर्ववासचा॥

मानुदवगदमसर्वं पूजापादाययत्कगां ॥ सम्वत्सवंतुसम्पुर्णं पुनराग
मनायच ॥ ॥ गिविसर्जनं ॥ संहानमूदयावलिविसर्जनं कलमन्नवि
सर्जनं ॥ भावम सस्यसादि ॥ ॥ गमायजमाननिर्मकदीकत्वा-
कले ॥ दकं नारिषकं च भनायाहीवदिदं कत्वा सिखानदिप्रमि
ष्टा भ्राणीवदि ॥ ॥ गमावाक्रधापूजा ॥ दहिधमदाने ॥ ॥ इति
श्रीसनस्त्याः घटस्थमनविधिः समाप्ता ॥ ॥

अधरिषकमंयः ॥ ॐ दवस्यत्वासविगुः प्रसवत्तवमावाह्र्यापूष्पा
हस्तायाम् ॥ सनस्त्येवावायनुय्यगियदधमि ॥ ॥ अथपूसा
प्राधनालिषिभम्यमा ॥ १ ॥ ॐ दवस्यत्वासविगुः प्रसवत्तवमावाह्र्यापूष्पा
हस्तायाम् ॥ सनस्त्येवावायनुय्यनुधमः सामाद
नालिषिचामि ॥ २ ॥ ॐ दवस्यत्वासविगुः प्रसवत्तवमावाह्र्यापूष्पा
हस्तायाम् ॥ अधिनावृषधननंजमवक्रवर्चसायारिषि
चामिसनस्त्येवृषधनवीर्यामानायालिषिचामिन्दिस्पन्दिथ

तिभ्योपनीरवीन्दोविषमैश्चोऽश्रुश्रुवाजिनीपतीः॥प्रतोदेवीसर
 स्वतीवाजेभिर्वाजिनीवतिर्धानामविश्रवन्तुनः॥येनत्वादेवीसर
 स्वत्यपक्रतेधनेहितोइत्योनवत्रतूर्यः॥४॥त्वन्देवीसरस्वती
 वाजेषुवाजिनीकयायुषेवनसनिंउतस्यानसरस्वती॥घोराहि
 रापवर्तिनिन्नाघ्रीवह्निषुष्टुतिं॥यस्योरुषन्तोऽश्रुकुलस्तेष
 मविहिनरापवः॥अमश्चरतिगेरुवन्ताः॥प्रानोऽपि॥अतिदिषः

वेषधरः ४२

स्वश्रररापकतावरि॥अनन्तहेवसूर्यः॥उनतः॥प्रेक्षासुसं
 स्वसासुजुष्टासरस्वतीलोम्याभूत॥२॥आपःपुजीपाधिर्वा
 म्पुहुरजोअन्तरीक्षांसरस्वतीरिदस्यातुसप्तधातुःपंचजाताव
 द्रयन्ती॥वाजेवाजेहव्याहव्याभूत॥प्रयामहिम्नामहितासुवेकिते
 शुम्भेभिरन्माज्यपसामयस्तमा॥रथइववृविश्वनेकतोपस्तत्याचि
 कितुषासरस्वती॥सरस्वत्यामितोनेषिवस्योमापस्युरीपयसामा

हाति २

नञ्चाधिक॥ जुषस्वने सरस्वादेव स्यावमावक्षात्रान्पररात्मा॥ ३ ॥
इति सरस्वती सूक्तम्॥ ॥ संवत् १८८२ माघ कृष्ण १३ तस्मिन्दिने श्री
वाग्देवतिराजानन्द उपाध्यायेन लिखितमिदम्पुष्टकं॥ ॐ नमो वागीश्वराय नमः॥ ॥ बृहस्पतिर्वाचा॥ स न स्वर्गीन् न मम्या
मिधराणां हृदयं स्थिता॥ कं० पद्मयोनिर्बुध० की० कान्तर्पु० गान्
दा॥ मतिदां वरदां शुद्धां वीना हस्तां वनप्रदां॥

दां

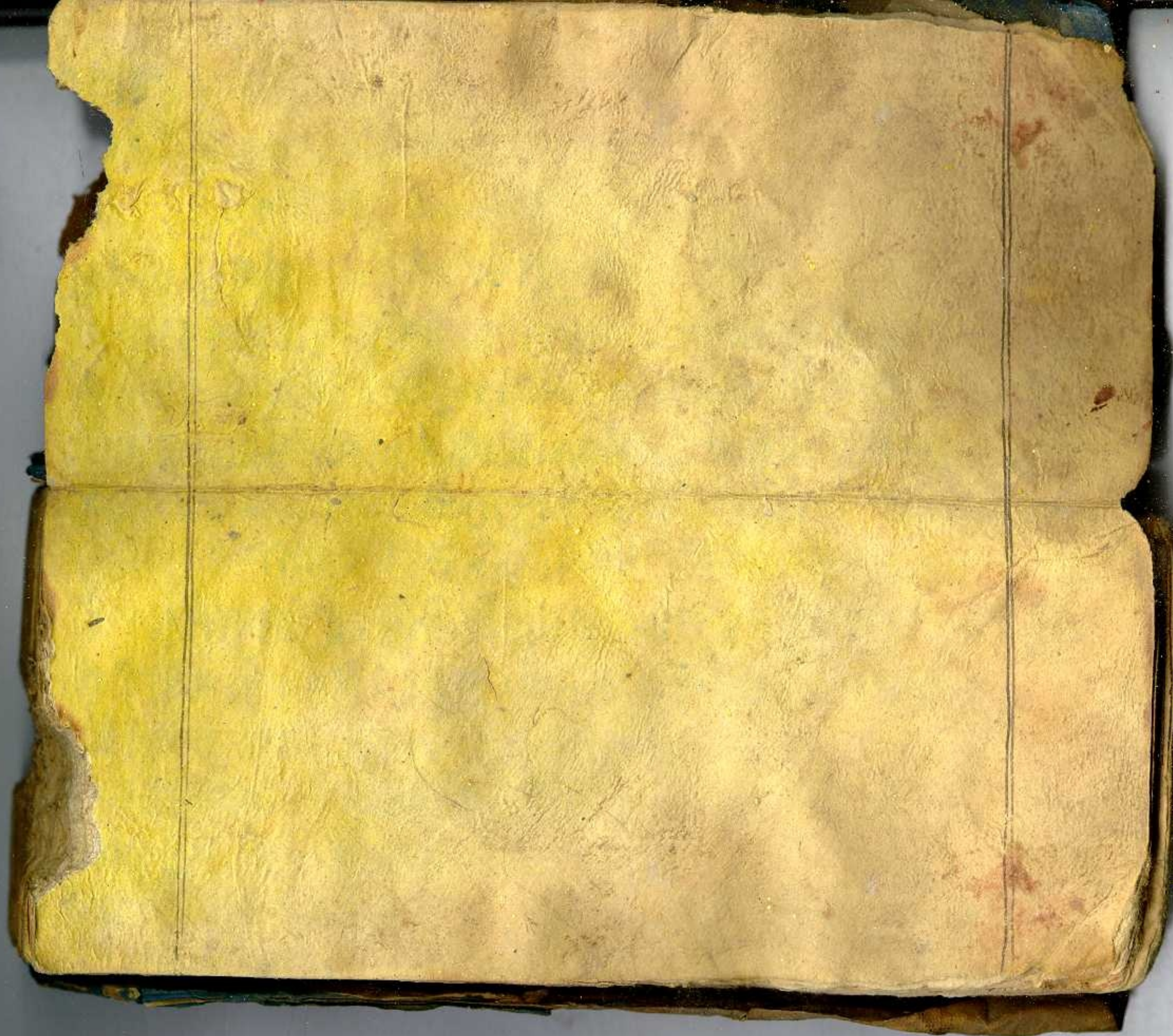
कुमरीध्वंसकात्रिणीम्॥ शुक्लां शान्तिमिवाप
हां शुक्लां मादृशं नम्रां गुरुरर्गं रक्षा न प्रिया॥ यथा प्राप्ते स्थानं वृत्तं
नीली शुक्लवर्णं मनोरमां॥ आदिपद्मं शुक्लनीलं प्रहमा मिह निधि
यां॥ वृत्ति सा संसृतां देवीं वागीरक्षानमहात्मनां॥ आत्मानं दर्शय
मासं नदिन्दु समप्रणं॥ श्री स न स्वर्गपूवाचा॥ वलं हनीषु रदं गय
म्भमनमिवर्गं॥ बृहस्पतिर्वाचा॥ वनदा यदि मे देवी रदं क्ल

नप्रयच्छमा॥ श्रीमन्नख्यवाच॥ दण्डगनिर्मलंरुद्रानंमरुद्रानगिमि
नापहा॥ सागुनानयरेवमास्तुवेक्ति सदानना॥ प्रिसंध्यायां
चिरत्वायेः॥ दंप॥ नस्तवं॥ मषांक॥ सदावासकविदामिन
संसयः॥ यः पर॥ प्रयगाहत्वा मम सागुमनूरुमं॥ मषांगृह
दावा संवादेच विजयाएवरा॥ ॥॥ मिलिगपुत्रारक्षवृहस्प
निकेतं वा रा॥ धनी सागुं समोपम॥ भुवः

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ सरस्वती उवाच ॥ ॥ श्रीकवीजेश
शिरुचिकमलेकल्पविस्पृष्टशोभे भव्ये भवानुवृत्ते कुमतीवन
दवे विश्ववंशं हि प्रादे॥ पद्मे पद्मे पविष्टे प्ररातजनमने मोद
सम्पादयित्री॥ प्रात्पुष्टाज्ञानकूटे हर निजदयिते देवि संसारसा
रे॥ ॥ ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रेकमलभवमुखाभोजज्योतीस्वरूपे रु
पा रूपप्रकाशे सकलगुरामये निर्गुरो निर्विकारे॥ नस्थूलेनाति



॥ ॥ सौमित्रांत्वां वचन्ते भजममरसनां मां कदाचिन्मने धामामे
बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न वमनो देवि मे पातु पापं ॥ ॥ न मे दुःखं क
दाचिद्विपदि वसयो प्रसूतेना कुलत्वं न त्रैलोक्ये कदाचिद्विपद्
रतु मम धीमती कुरु राता कदाचिन्मने ॥ ॥ न मे दुःखं कदाचिद्विपद्
प्रतिदिनमुखसिखौ तिथौ न मे कदाचिन्मने ॥ ॥ न मे दुःखं कदाचिद्विपद्
मिमत्तविभवो वाक्यद्विपद् ॥ ॥ न मे दुःखं कदाचिद्विपद् ॥ ॥



ॐ नमः सरस्वती नमः ॥ ॥ ॐ अस्य श्री महासरस्वती पञ्चश्री की
सवराजस्तोत्रमन्त्रस्य बृहस्पति ऋषिरनुष्टुप् छन्दो श्री महासरस्व
ती देवता मम चतुर्दश महाविद्या प्राप्ता र्थज पे वि नि योगः ॥ ॥
बृहस्पति रुचा च ॥ सरस्वती नमः स्वाभी चेतनां हृदि संस्थिता म ॥
कंठे यस्य प्रदम्योनीं हीं हीं कार प्रिया शुभां ॥ ५ ॥ मुक्तिदां वरे
दां चैव सर्वकामफलप्रदां ॥ केशवस्य प्रियां देवीं नमः हरताम्बुज

मि२

प्रदां॥ ३ ॥ ऐं ऐं मंत्रं पुंदां सदां ध्यात्वा कुमतिर्धं सकारकं॥ सुप्र
शां निरालम्बामज्ञानतिरापहं॥ ३ ॥ आदित्यमराउलेलीनां पुंदां
मिजनप्रियां॥ मोक्षप्रदां सुधां नित्यां सुभगां शोभनप्रियां॥ ४ ॥
पद्मोपरिस्थां कुराउलीनीं शुक्लवस्त्रां मनोहरां॥ ज्ञानकरां जन
दीपां भक्तजायविनाशिनीं मू॥ ५ ॥ इति स्तुतयं नदा देवीवागी
सेनमहात्मना॥ आत्मानंदं दर्शयामास शरदिन्दुसमप्रभां॥ ६

श्रीसरस्वत्युवाच॥ दत्तनेमिर्मलं ज्ञानं कुमतिर्धं सकारकं॥ स्तोत्रे
रानेन ये भक्त्या मास्तु वन्ति सदारनः॥ ७ ॥ लभते परमं ज्ञानं मम
तुल्यपराक्रमम्॥ कवित्वं मत्पुसादेन प्राप्नोति स्म मनोगताम्॥ ८ ॥
त्रिसंध्यं प्रयतो भूत्वा यः इदं पठते नरः॥ तस्य करोते सदा वासं करिष्या
मि न संशयः॥ ९ ॥ इति रुद्रयामले ब्रह्मनिर्वाणं पंचश्रीं महा
सरस्वतीस्तवराजस्तोत्रं समाप्तम्॥ ॥ ना २० ६ ३३ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ सुरादि त्रिश्वरे रम्ये ॥ ॥ हनसा वलान्तरे ॥
 आश्वलायनमे ॥ काशपप्रहसुनयस तथा ॥ ॥ जघययुः ॥ कथं
 सारस्वतः प्राप्तिः केन ध्यायेन सुव्रत ॥ महासरस्वती येन तुष्टा भवति
 तद्वद ॥ आश्वलायन उवाच ॥ शृण्वन्तु कथयः सर्वगुह्या ज्ञेयतरं
 महत् ॥ दशश्लोकमिदं सोत्रं वदामि ध्यानपूर्वकं ॥ पारिजातवना
 न्तस्थेन वमानिक्यमराउपे ॥ नवरत्नमये श्रीमान् सिंहसनगतां बुजे

रि २

॥ पद्मासने सुरवासीनः ॥ ध्यायेदित्थं फलप्रदं ॥ निष्कलांशकलां देवि
 यत्तु कोशयुतः प्रभां ॥ अंकुरां चाक्षसूत्रं च पाशपुष्टकधां शिं ॥
 मुक्ताहारैः सभायुक्तां देवीं ध्यायेच्चतुर्भुजां ॥ सिंहेन दक्षिणाभेन
 वैरागपरिभूषितां ॥ सुसतीं वेदमध्यातां चन्द्रार्द्रकृतशेषरां ॥ जटा
 कलापसंयुक्तां पूर्णाचन्द्रनिभानतां ॥ विलोचनां महादेवीं सर्वा
 भरणभूषितां ॥ कटकैः स्वर्गरत्नाद्यैर्महावल ॥ ॥ ॥ कंकु

करिठ सुतां मोष्टी खरान् नूपुरधारिणी ॥ केयुरैर्मोखलये श्वयेति
यन्ती जगत्रयां शब्दवृत्तात्मिका न्याये ध्यान कामः समाहितः ॥ सुत
स्फटिक संकाशां जटामुकुट मण्डितां ॥ सर्वविद्यात्मिकां दवीं ध्याये
खण्डेन्दु मण्डितां ॥ ॐ अस्य श्री दशश्लोकी महासरस्वती स्तोत्र मंत्र
स्य आश्वलायन ऋषिः श्री महासरस्वती देवता अनुष्टुप् छन्दः य
द्वाग्य दंतीति बीजं देवी वाचमजनयन्त देवतेति शक्तिः प्रारो दे

पद्यः १

वी सरस्वतीति कीलकं मम अनवद्यगर्थं सुविद्याप्राप्त्यर्थे जपे
विनियोगः ॥ वक्ष्ये सारस्वतं स्तोत्रं वाक्प्रवृत्तिकरं परं । लक्ष्मीविवर्द्ध
नं चैव विवादे विजयप्रदं ॥ परस्वत्मात्मिकां देवीं भुक्तिमुक्तिफल
प्रदां । पराम्यस्तोमिता मेव ज्ञानशक्तिसरस्वतिम् ॥ ॥ ॐ प्रारो देवी
सरस्वतीत्यस्य मंत्रस्य भार्गव ऋषिर्गायत्री छन्दः श्री महास
रस्वती देवता ऐं बीजं मम वाक्पि द्व्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॥ ॐ

प्राणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वीजिनीवती धीनामविताश्रवन्तुनः॥ यावे
दांतोक्ततैकः स्वरूपापरमार्थतः॥ नानारूपात्मनावक्तासामं पा
तु सरस्वती॥ ॥ ॐ आनो देवी त्पस्य मंत्रस्य अत्रिः ऋषिः सिद्धिः रुद्रः
श्रीमहासरस्वती देवता लीं वीजं मम वाक् सिद्धयर्थे जपे विनियो
गः॥ ॥ ॐ आनो देवी ब्रह्मतः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यश
हवं देवी जुषाणा घृतावीशमानो वाचमुशती शृणोतु॥ यासां गो

पां गवे देषु चतुर्थे कौवगी यते। अद्वैतावतराः शक्तिसामं पातु
सरस्वती॥ ॥ ॐ पावकानः सरस्वती त्पस्य मंत्रस्य मधुः रुद्र ऋषिः गा
यत्री रुद्रः श्रीमहासरस्वती देवता सौं वीजं मम वाक् सिद्धयर्थे जपे
विनियोगः॥ ॥ ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वीजिनीवती यज्ञं
वष्टुर्धियावसु। अन्तर्यामना विश्वं त्रैलोक्यं यानि गच्छति॥
रुद्रादित्यादिरूपस्था सामं पातु सरस्वती॥ ॥ ॐ वो दयित्री त्पः

स्वमंत्रस्वमधुच्छन्दः ऋषिगायत्रीछन्दः श्रीमहासरस्वतीदेवता
क्रींवीजंममवाक्सिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः॥ ॥ॐ वौदयित्रीहृत्
तानांचेतंतीसुमतीनां॥ यज्ञंदधेसरस्वती॥ अनादिनिधनानन्तासा
मांप्राप्तुसरस्वती॥ ॥ॐ महो अर्गासरस्वतीत्पस्वमंत्रस्वमधुच्छन्द
ऋषिगायत्रीछन्दः श्रीमहासरस्वतीदेवता क्रींवीजंममवाक्सि
द्ध्यर्थेजपेविनियोगः॥ ॥ॐ महो अर्गाः सरस्वतीप्रचेतयतिके
४ यावर्गावेदवाक्यार्थस्वरूपेणविवर्तते॥५४

तुना॥ धियोविश्वाविराजति॥ अध्यात्ममधिदैवंचदेवानांसम्य
गीश्वरी॥ पुन्यगातेवदंतीवसामांप्राप्तुसरस्वती॥ ॥ॐ चत्वा
रीवागीत्यस्वमंत्रस्वमधुच्छन्दः ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीमहा
सरस्वतीदेवता क्रींवीजंममवाक्सिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः॥
ॐ चत्वारिवाक्यरिमितापद्यातितानि विदुर्ब्रह्मणायेमनीषि
राः गुहानिस्तिनिहितानेकं यंतीतुरीयं वाचोमनुष्यावदंति॥ या

प्रत्यगृह्णामि ज्ञानैर्व्यज्यमानानुभूयते ॥ व्याधिनीजप्रिहृषैकासा
सांपातुसरस्वती ॥ ॥ ॐ यद्वाग्यदंत्यस्य मन्त्रस्य भार्गवनेमिक्क
षिस्त्रिष्टुष्टुन्दः श्रीमहासरस्वती देवता कौंवीजं मम वाक्सिद्धयर्थं
जपे विनियोगः ॥ ॥ ॐ यद्वाग्यदंत्यविवेकानिराष्ट्री देवानां
निष्सादमत्ता ॥ चतस्रुर्जुन्दुहे पयांसि कस्त्रिन्दस्याः परमं ज
गामनामजात्यादिभिर्भेदैरस्रधायाविकल्पिता निर्विकल्पा

तमना वाक्तासा सांपातुसरस्वती ॥ ॐ देवी वाचमजनयन्तेत्य
स्य मन्त्रस्य नेम भार्गवक्क षिस्त्रिष्टुष्टुन्दः श्रीधेनुवागीश्वरी
देवता कौंवीजं मम वाक्क सिद्धयर्थं जपे विनियोगः ॥ ॥ ॐ देवी
वाचमजनयन्त देवासां विश्वरूपाः पञ्चवैवदन्ति ॥ सानो मदे
षमुर्जुन्दुहाना धेनुवागीश्वरी नुपसुष्टतेतुं ॥ व्याक्तावक्ताशिरः सर्व
देवाद्यावाहरंतिया ॥ सर्वकामदुष्टान्धेनुः सा सांपातुसरस्वती

॥ ॐ उत त्वः पश्य इत्यस्य मंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः त्रिष्टुप्
 न्दः श्रीमहासरस्वती देवता कः बीजं मम वाक् सिद्धार्थे जपे
 विनियोगः ॥ ॐ उत त्वः पश्य ददर्शनाय मुत त्वः शृण्वन्त शृणो
 त्वेनां ॥ उतो त्वस्मै तन्वा विस्सखे जायेव प्रत्न उशती सुवासाः । यां
 विदित्वा खिलं वंधं निर्मथर्मी मलं वर्मेनाः ॥ योगीयाति परं स्था
 नं तामां प्रातु सरस्वती ॥ ॐ अं वीतम इत्यस्य मन्त्रस्य अत्रि

अपिः त्रिविधः श्रीमहासरस्वतीदेवता श्रीं वीजं समवाव
सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॥ ॐ अन्वितमे नदी तमे देवी तमे
सरस्वती ॥ अपरास्ता इव सप्तसि प्रशस्तिमं वनस्कृधि नामरूपा
लकं सर्वयः स्यामा विज्ञाने पुनः ॥ ध्यायन्ति बुद्धिरूपे कां सामां
पातु सरस्वती ॥ पद्मपत्रविज्ञा लाक्षी पद्मकेसरवर्णिनी ॥ नि
त्पापद्मालया देवी सामां पातु सरस्वती ॥ यः कवित्वं निरातं कं

मुक्तिमुक्तिं च वांछति. सोम्यच्चैर्नांदशश्लोक्याभक्त्यास्तोति सरस्व
 तीं. तस्यैवं रक्तवती नित्यं समभ्यर्च्य सरस्वतीं. भक्तिश्रद्धाभियुक्तः
 स्य घासमासात्पुयतो भवेत्. ततः प्रवर्तते वाणी खेद्याललिताक्षराः। ग
 द्यपद्यात्मकैः शब्दैः प्रमयेश्च विवक्षितैः। अश्रुतं बुधने गुंथं प्रायः सा
 रस्वतः कविः। श्रुतश्च धारयेत् शुखलंगीः स्पष्टवाग्भवत्. विख्यातः
 सर्वलोकेषु वाग्मी भवती पूजितः. अजेयः प्रतिपक्षाणां स्वयं जे

तामिजायते। स्वयूथे वेदवाह्ये श्रविवादे च स्तुते स्तुतिः. अहं वाचस
 ति विष्णुः शिवो वास्मीति भावयेत्. एवं भावयता तेन हृदयेतिरपि
 स्वयं. न शक्नोति समं वक्तुं न नेषन्तेषु का कथा। न कांचनं स्त्रियं
 निन्दे न देवान्नापि ब्रह्मि जान्. न नार्येनाभिभाषते. सर्वत्रैव क्ष
 मीवेत्. सर्वत्रैव प्रियं कुर्याद्यदि देहेषु भवात्मनः। श्लोकैरेव ति
 रस्कुर्यात्तिष्ठति प्रतिवादिनं. प्रतिवादिगजानां तु सिंहो भवति

सर्वदा॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूज्या देवी सरस्वती॥ यद्वागीति क्र
षेनेव देवी योजयते सदा॥ तस्यानासंस्कृता वारणी मुखादुच्चरके
कचित्॥ ॐ नमामि यानी निशामि नाथ रेखा लंकृत कुराडलां।
भवानी भवसंतापनिर्वानसुधानदी॥ यथा चैदं धृतं सर्वजगत्स्थाव
रजंगमं। यां मत्वा लोकपालाद्याः स्वे स्वे लोके प्रतिष्ठिताः॥ चतुर्मुखमु
खां भोजवरहं सवधूर्ममा मानसे रमतां नित्यं॥ सर्वशुक्ला सरस्व

ती॥ शरदिन्दुविकाशि मन्दहासां लसदिन्दी वरलोचना भिरामां
। अरविन्दुसमानमातिसोभामरविन्द्यासन सुन्दरी मुपासते॥ श्रीमच्च
न्दनचर्चितो ज्वलवपुः शुक्लाम्बरामल्लिका माला लंकृत कुंदलाप्र
विलसन्मुक्तावलीशोभिता॥ सर्वज्ञाननिधानपुस्तकधरारुद्राक्षमा
लाधरा॥ वाग्देवी वदनां वुजेव सतु मे त्रैलोक्यमाता चिरं॥ आकुंदेन्दु
नुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीराणां वरदराउमं दितक

रायाश्चेतपद्मासनायावद्वाच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदावंदितासामा
 पातुसरस्वतीभगवतीनिःशेषयाद्यापहा॥ दोभिर्युक्ताचतुर्भिः स्फटि
 कमणिमयीमक्षमालादधाना। हस्तेनैकेनपद्मं सितमपि वशुकंपु
 त्तकं वापरेण॥ यासाकुरादेशंखस्फटिकमणिनिभाभासमानास
 माना। सामेवादेवनेयंवसतुवदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥ पाशांकुश
 धरावारीचीरापुस्तकधारिणी। ममवक्त्रेवसेनित्यंदुग्धकुराडे

नि२ ३३

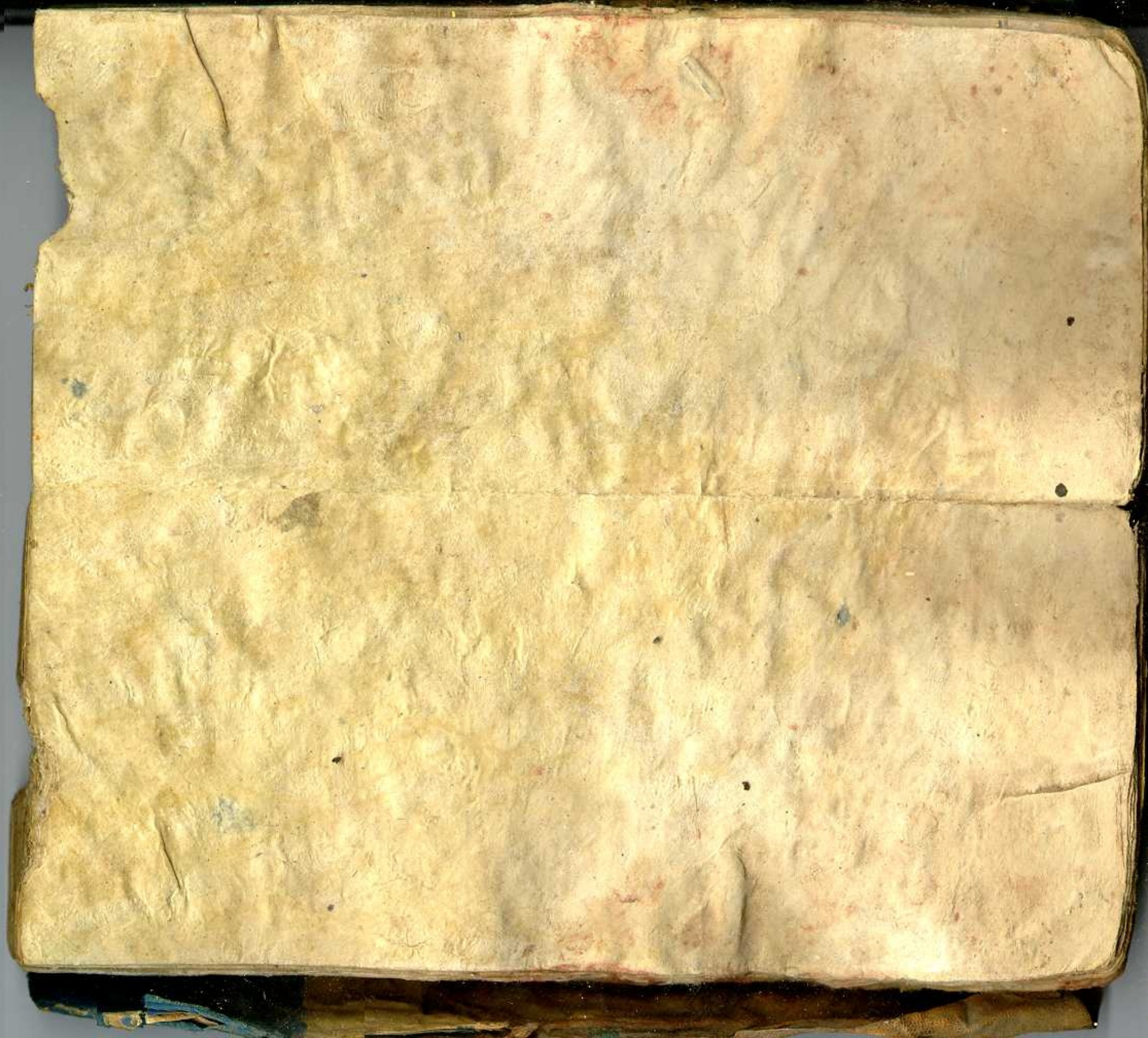
न्युनिर्मलां॥ इत्याश्वलायनद्रुदंनिजगाददेव्याः स्तोत्रसमस्तफ
 लभोगनिदानभूतं। एतत्पठेद्विजवरः कवितामुपैतिसर्वाशिवा
 दितफलान्मुपयातिशीघ्रं॥ इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुष्मि
 स्तोतियोभक्तिनमो॥ वाराणोवाचस्पतेरप्यभिमतविभवोवाक्यदुविश
 येच। तस्यस्यादिष्टलाभंसुतमिवसततंरक्षमेसाचदेवी॥ स्तोत्रागं
 यस्पलोकेप्रशरति कविताविद्यमस्तंप्रयाति॥ ॥ इति श्वलायन

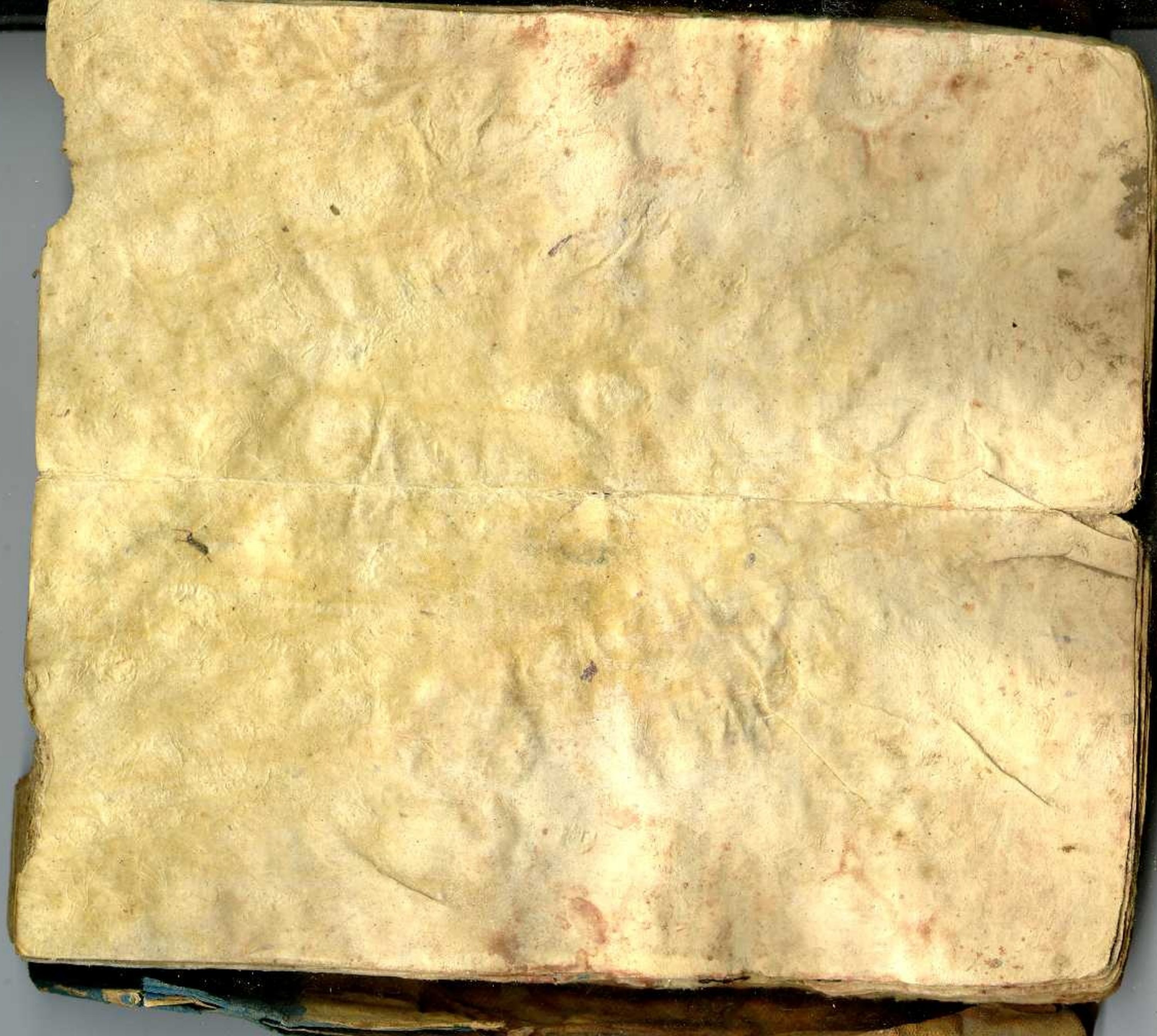
प्रोक्तं दशश्लोकी महासारस्वतप्रदं सरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभं
 संवत् २८२ फाल्गुण शुक्ल ७ रो ४ तस्मिन् दिने श्रीसिद्धिराजानन्दरा
 मर्पनात्मजश्रीवाग्पतिराजानन्दोपाध्यायेन पुत्रार्थे लिखतु मिदम्
 श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी ॥ विशारंभ
 करिष्मि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ पादां वुजंगुरुणां च वन्दे देवाजप
 ध्यतः ॥ प्रथमं भारतीनामर्द्धीतीयं सरस्वती ॥ तृतीयं सारदा देवी च

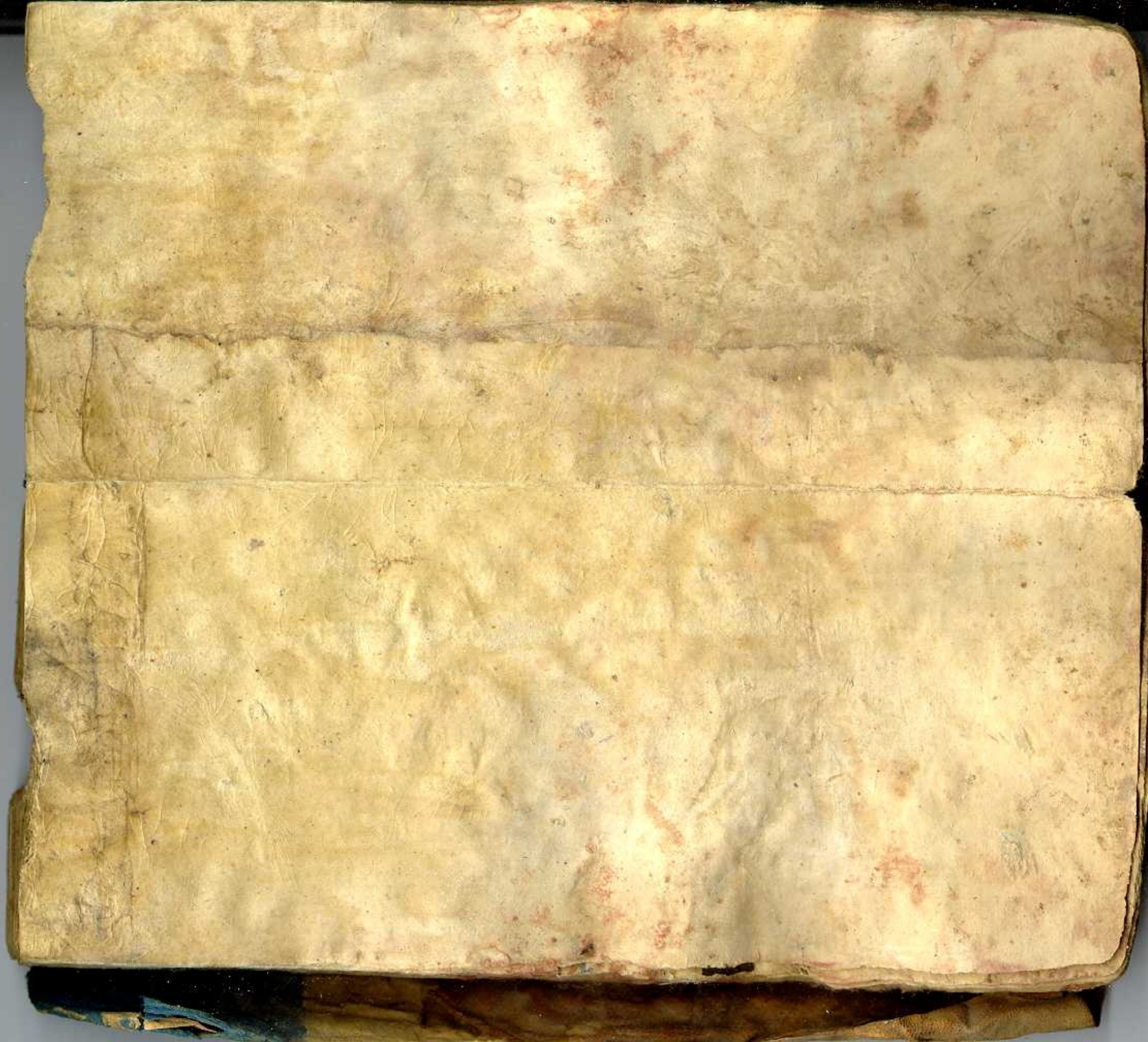
तुर्थं हंसवाहनी ॥ पंचमं युगविद्यातापसं वागीश्वरी तथा ॥ सप्तमं रा
 खातुगोमारि अष्टमं धर्ममाधका ॥ नवमं श्रीजगत्माता दशमे ब्रह्मचारि
 णी ॥ एकादशपादुद्रवाच द्वादशावरकंध्यतः ॥ सप्तद्व्यंशनामानि त्रिसंध्यं
 यः पठेत्तरः ॥ तानि तस्य भवेत्तस्य हस्यहस्यं तिगच्छति ॥ इति श्रीसरस्वतीदे
 व्याद्यादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णं पूर्तिमगात् ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥
 श्रीमद्वाग्वादिनी विद्महे श्रीकामेश्वरी धीमहि तन्नः शक्तिप्रदयात् ॥
 ऐं सारदायै विद्महे ऐं सरस्वत्यै धीमहि तन्नः शक्तिप्रदयात् ॥

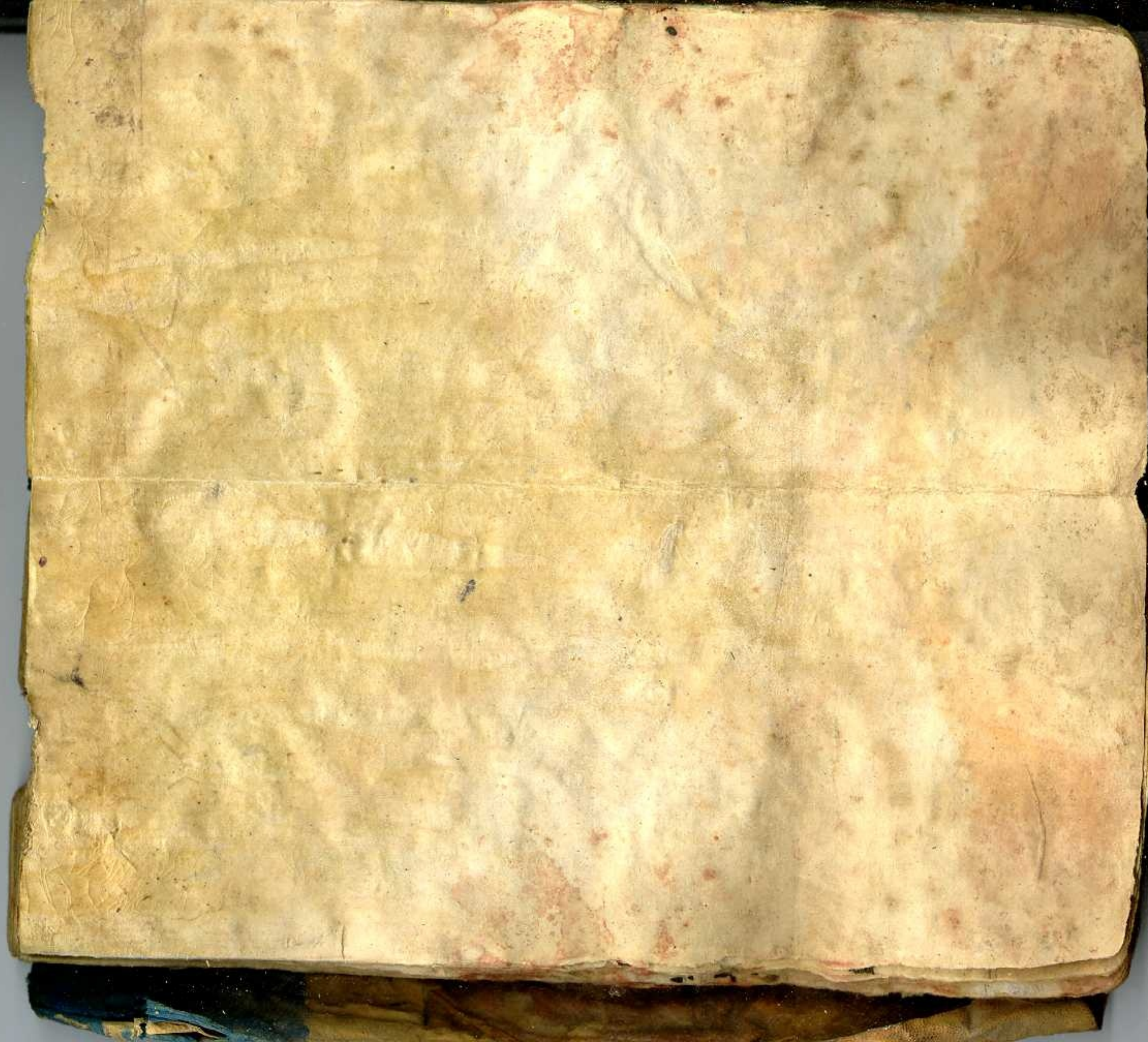
X

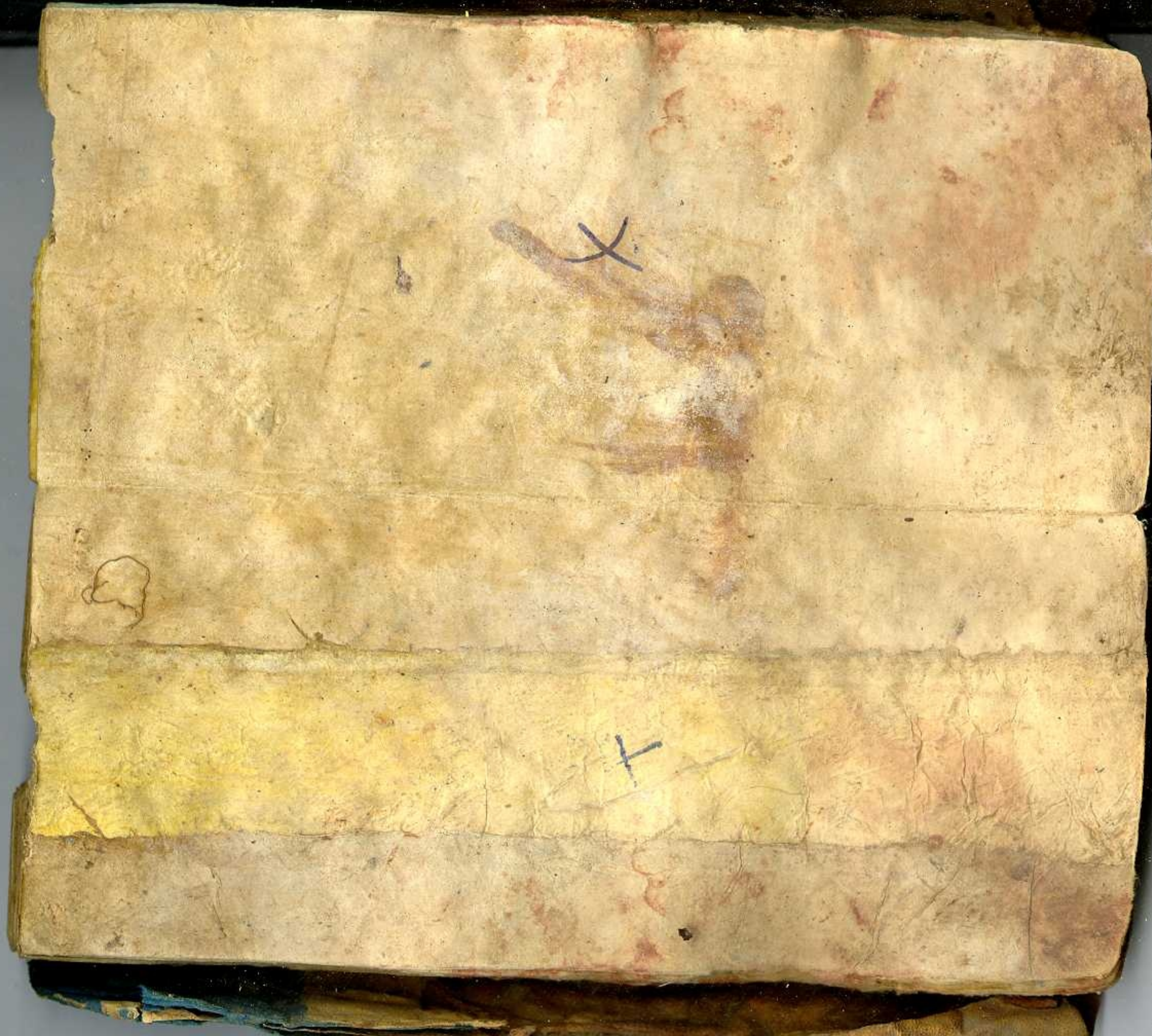
X

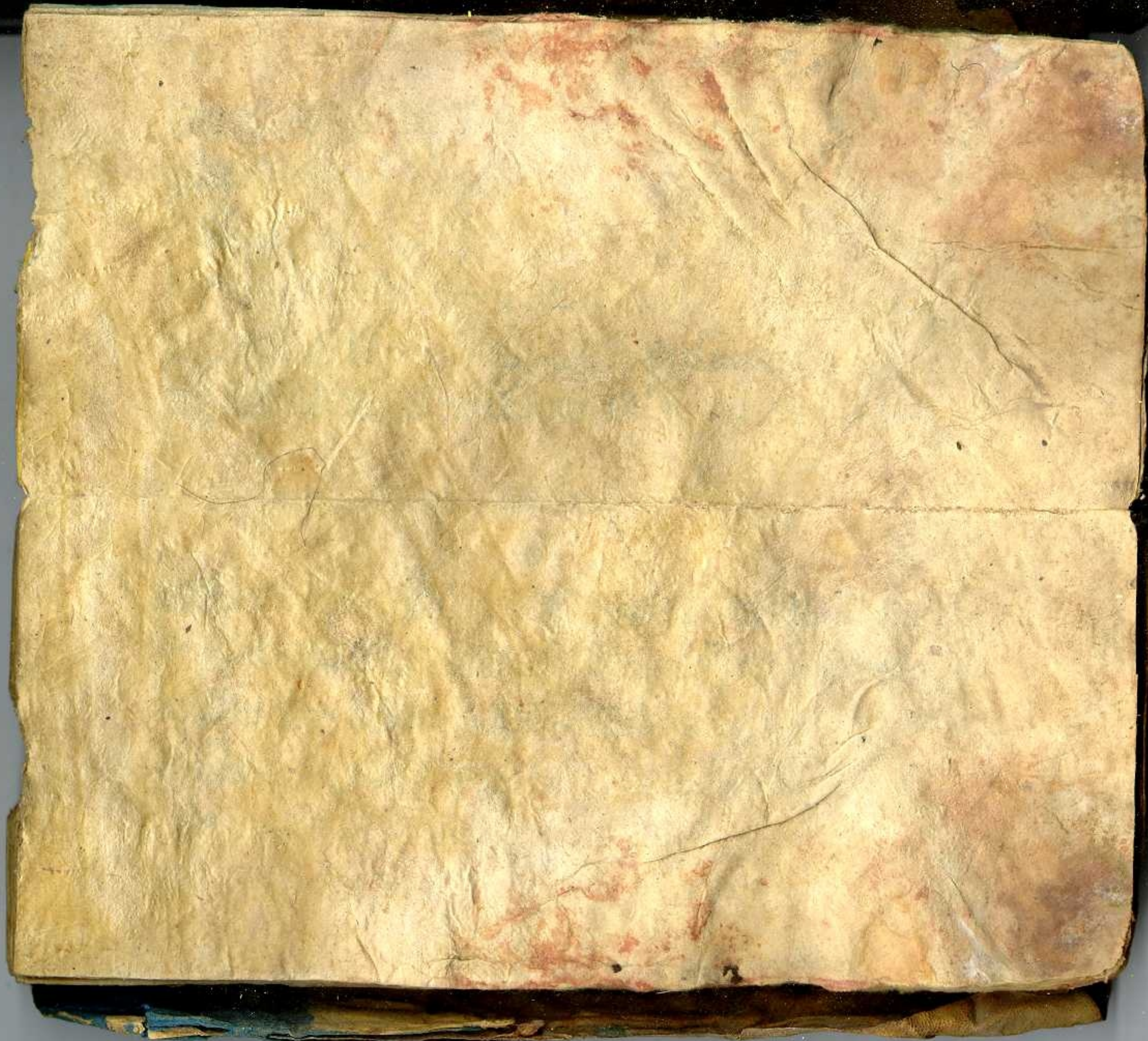


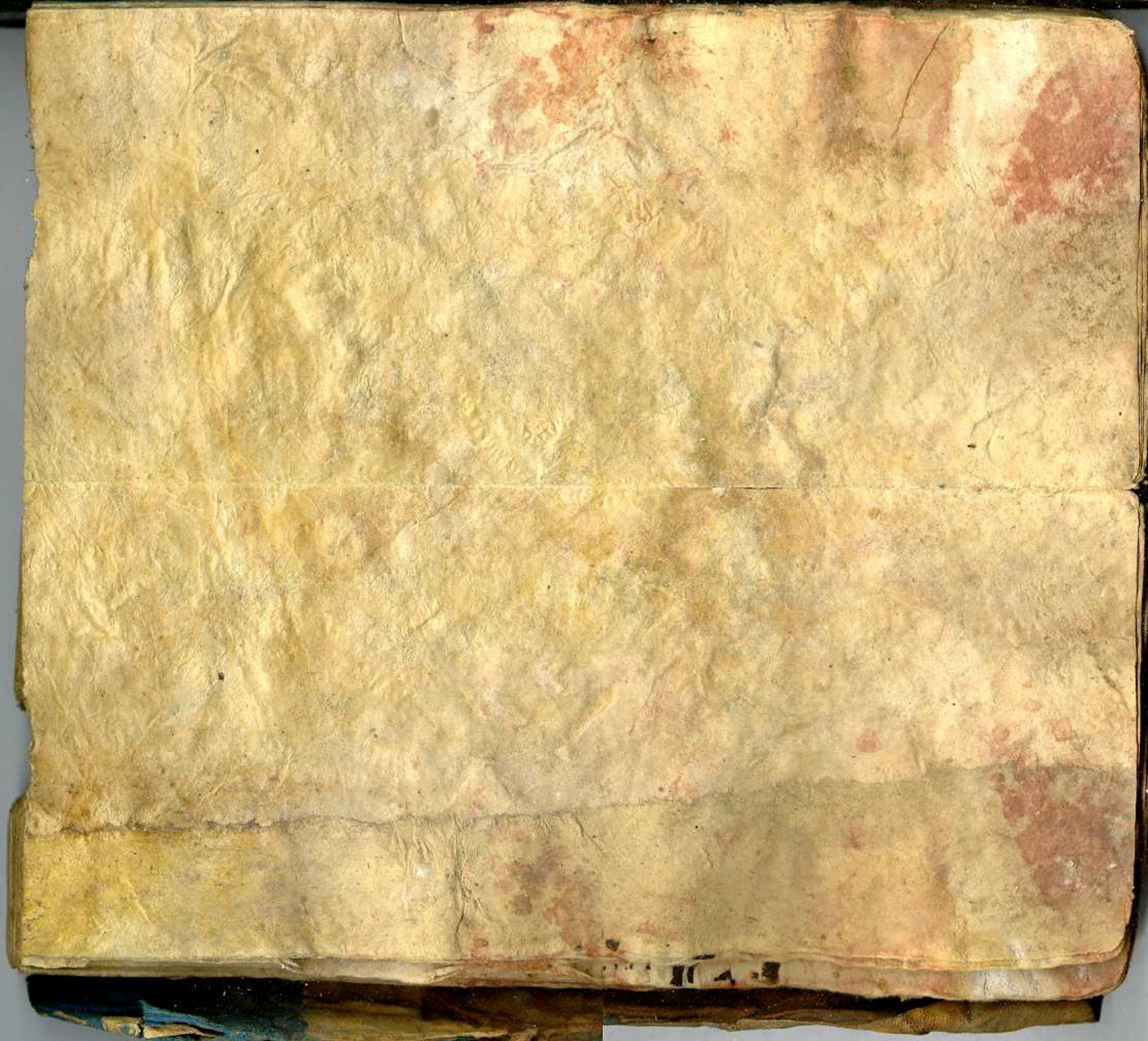


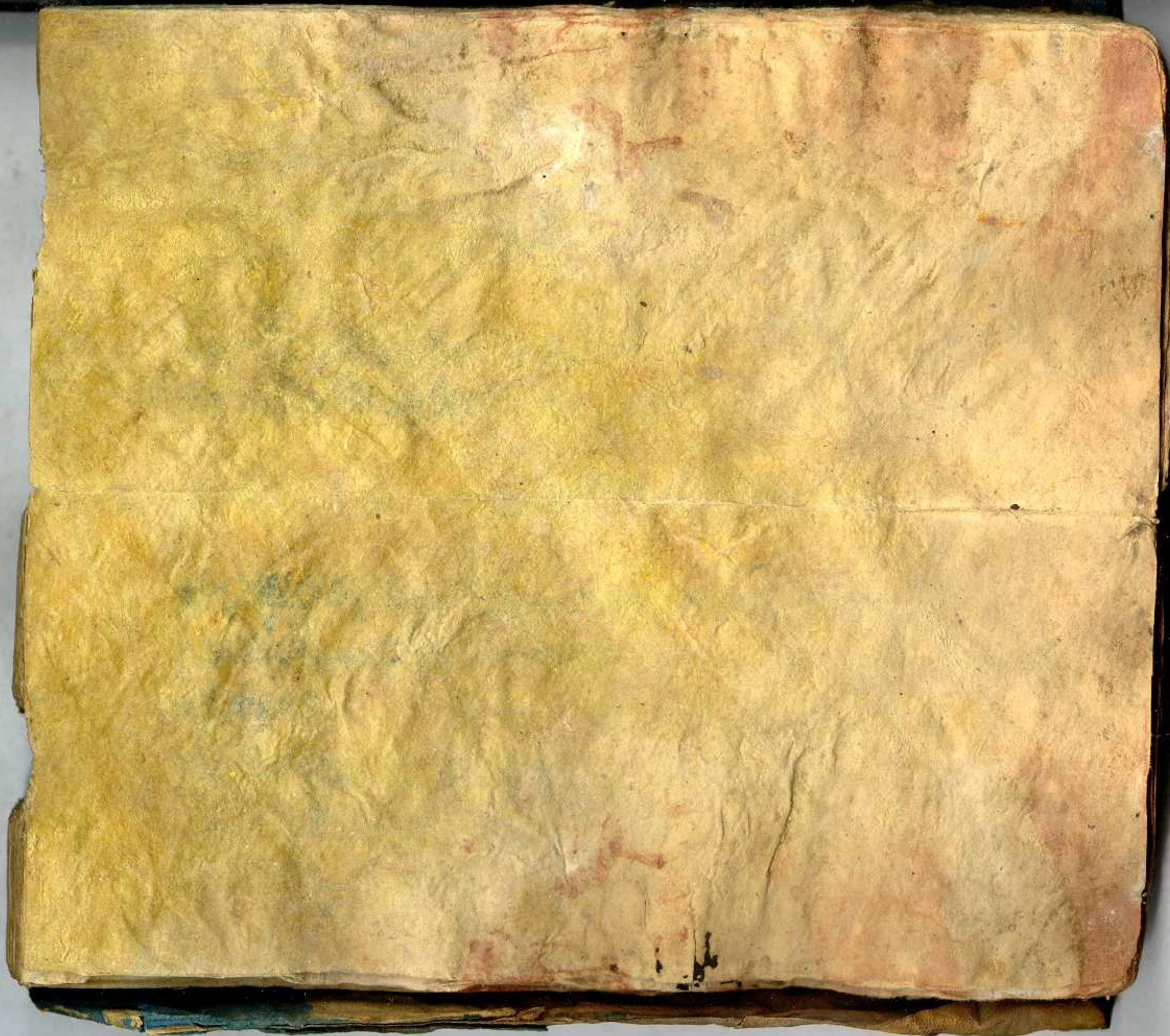




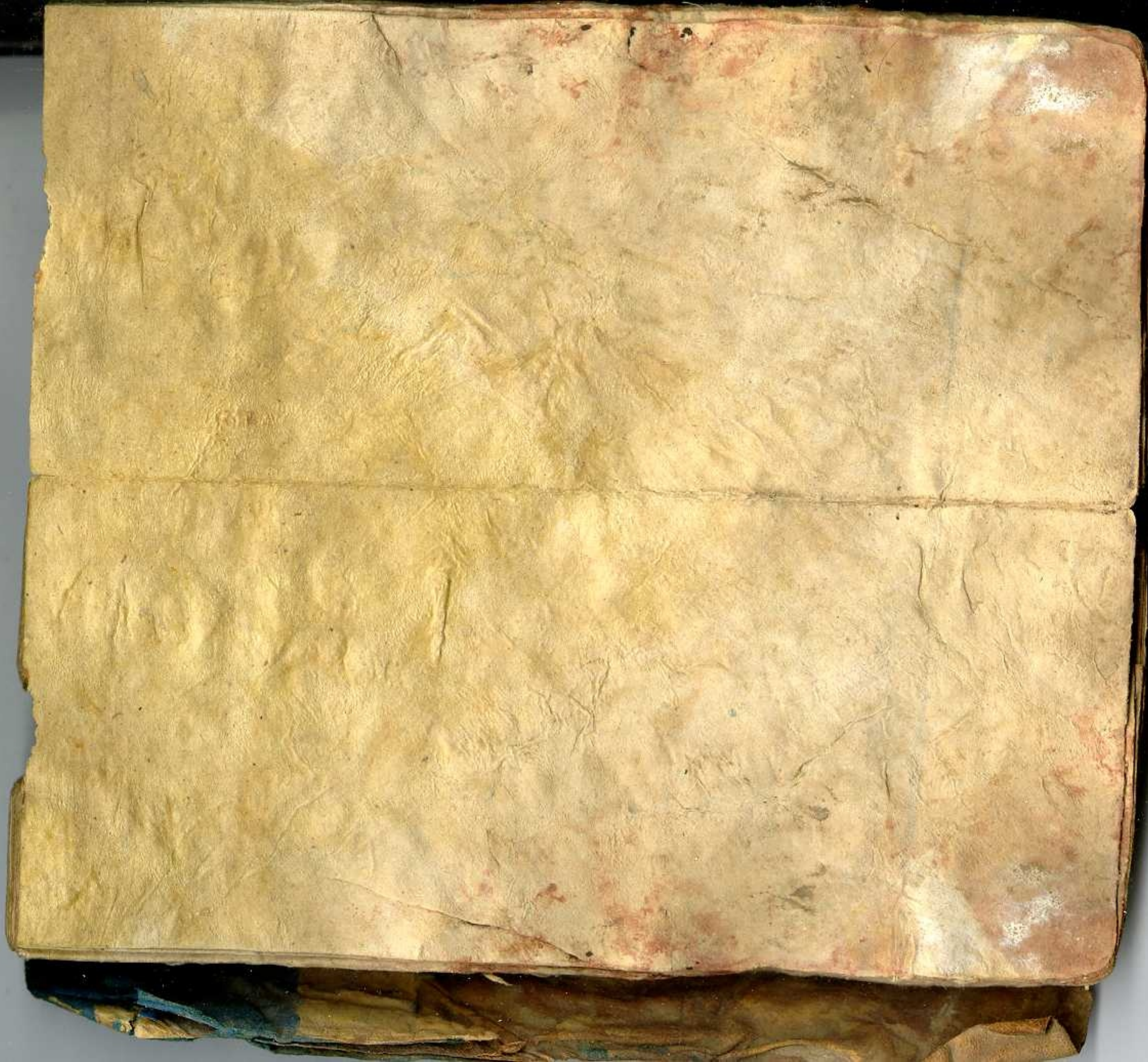


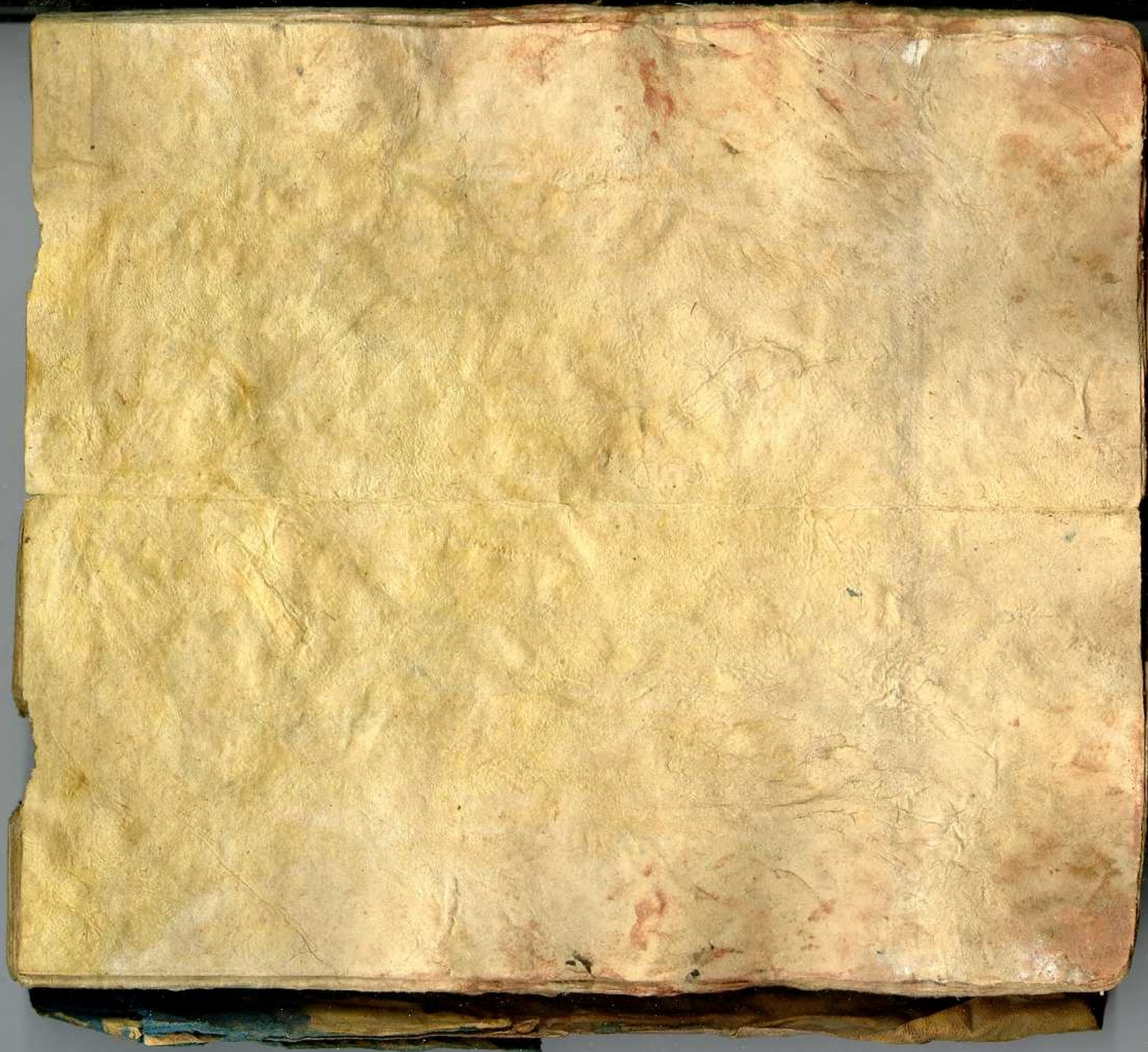


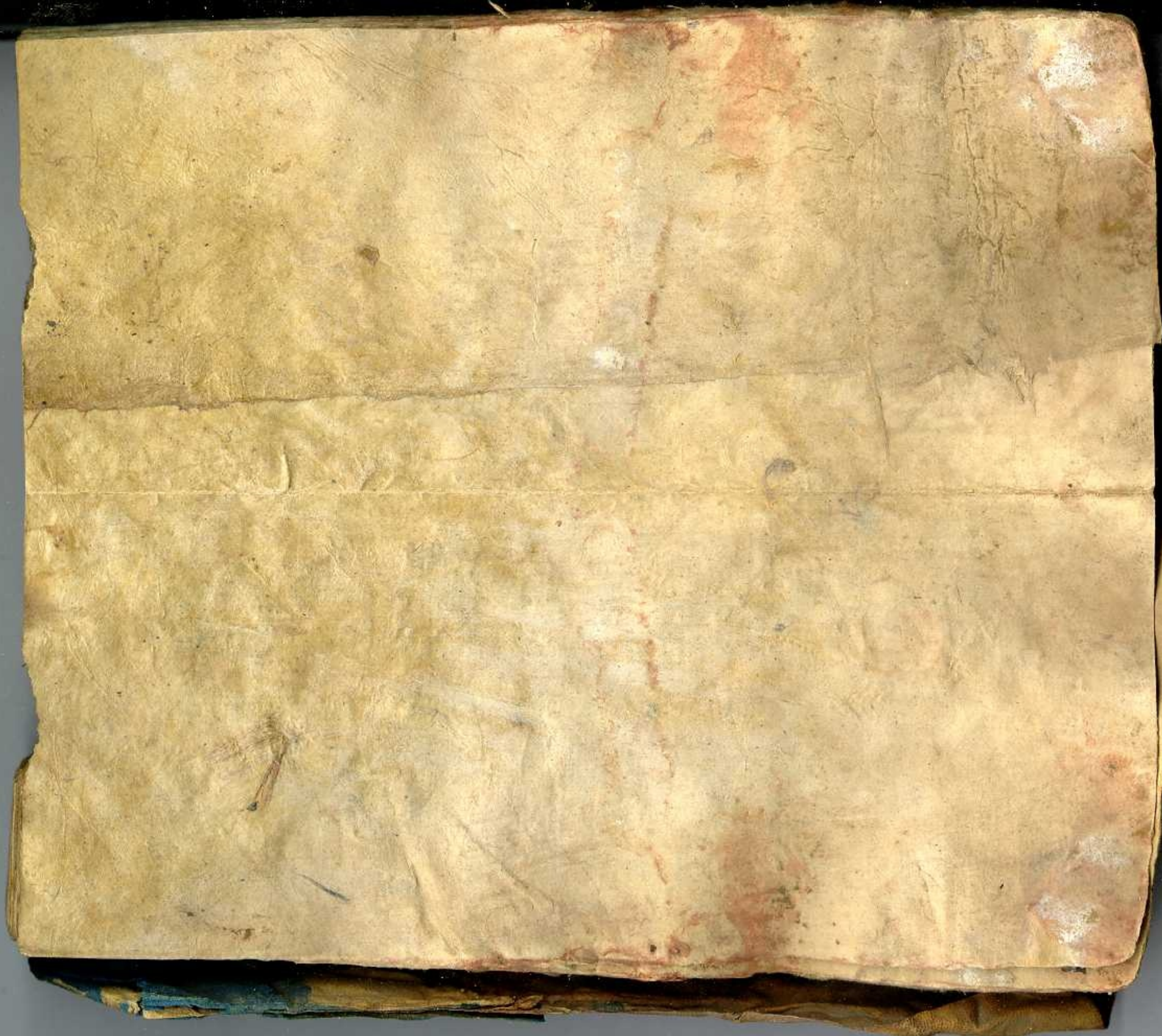


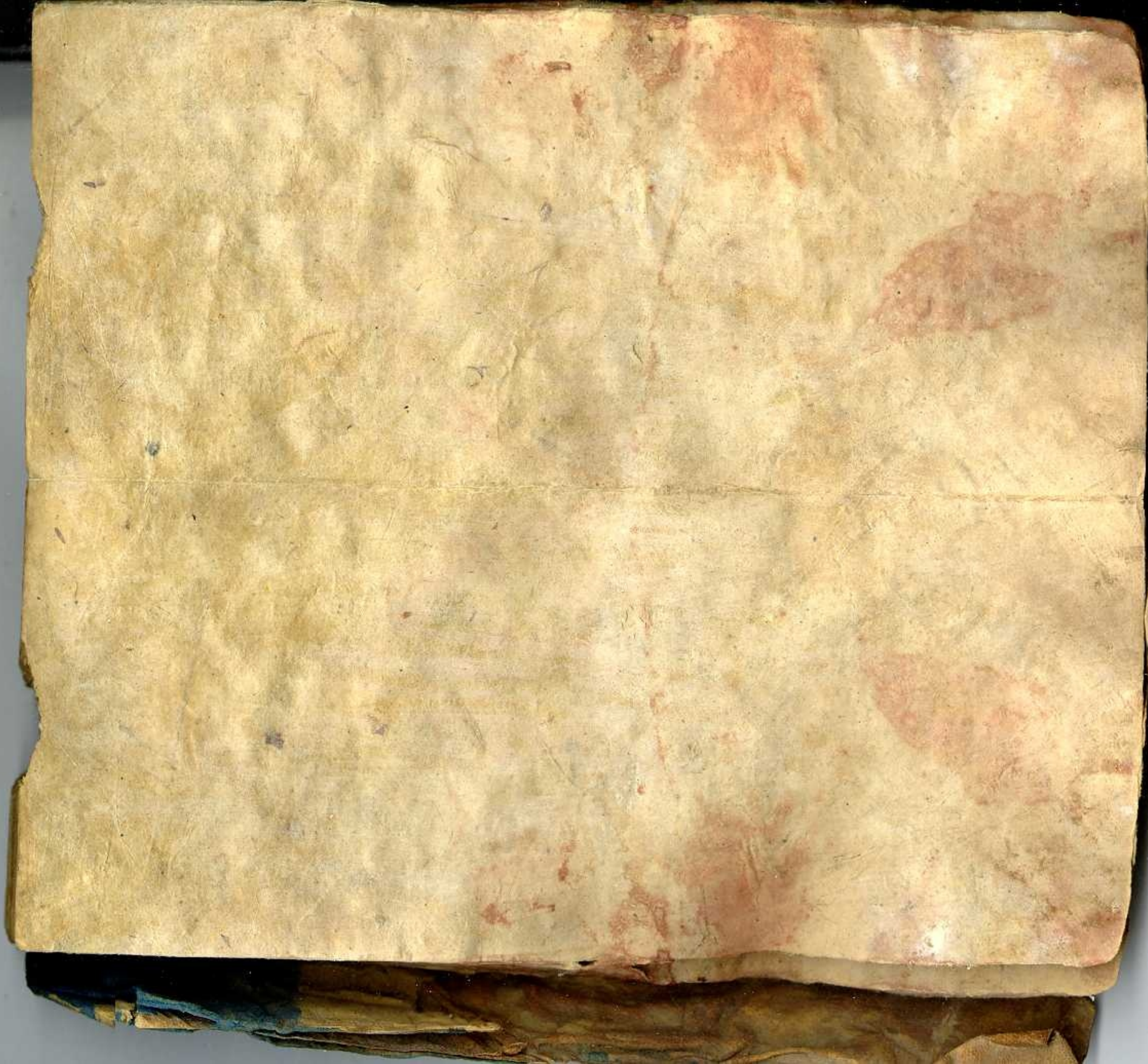


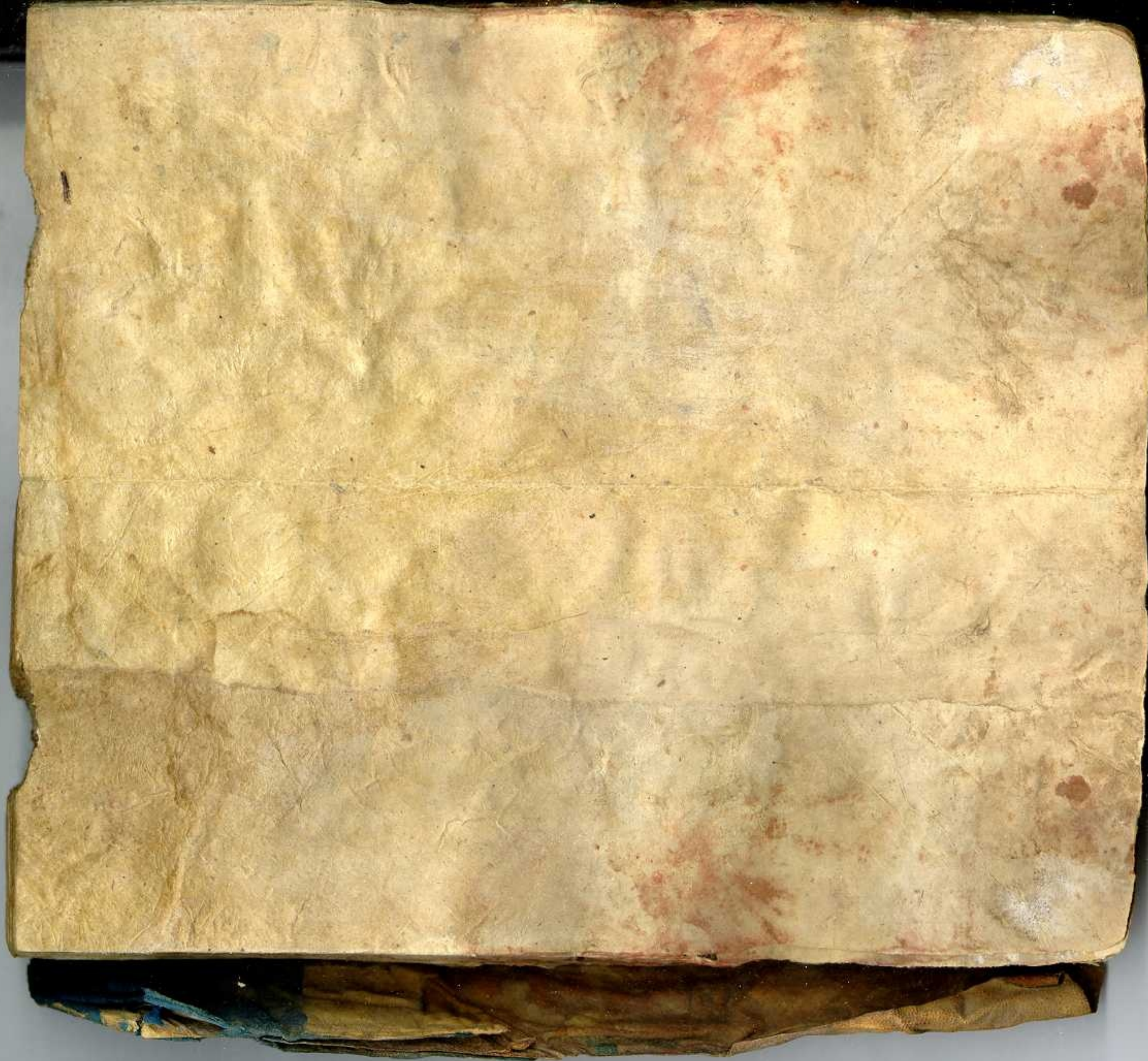


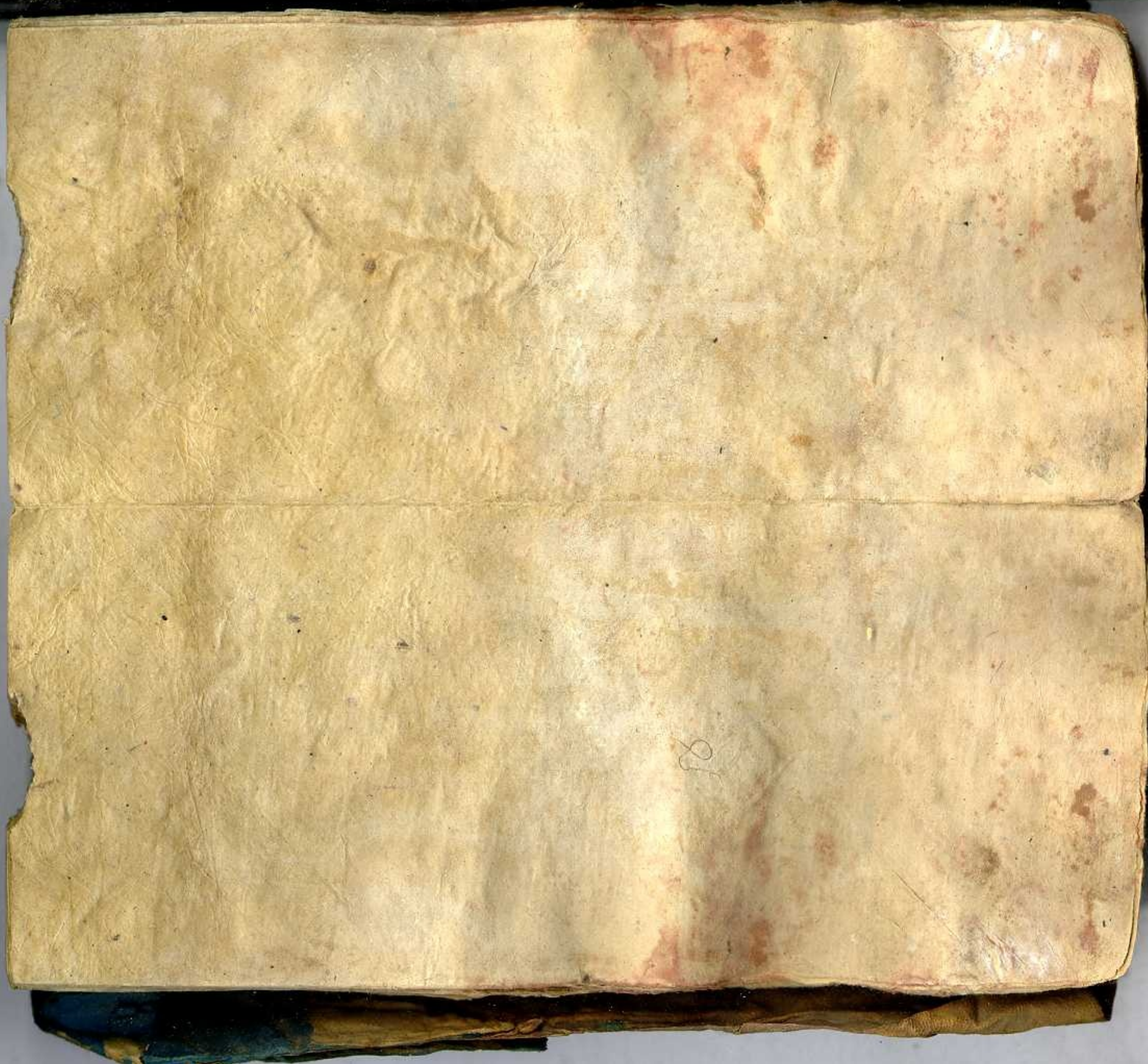


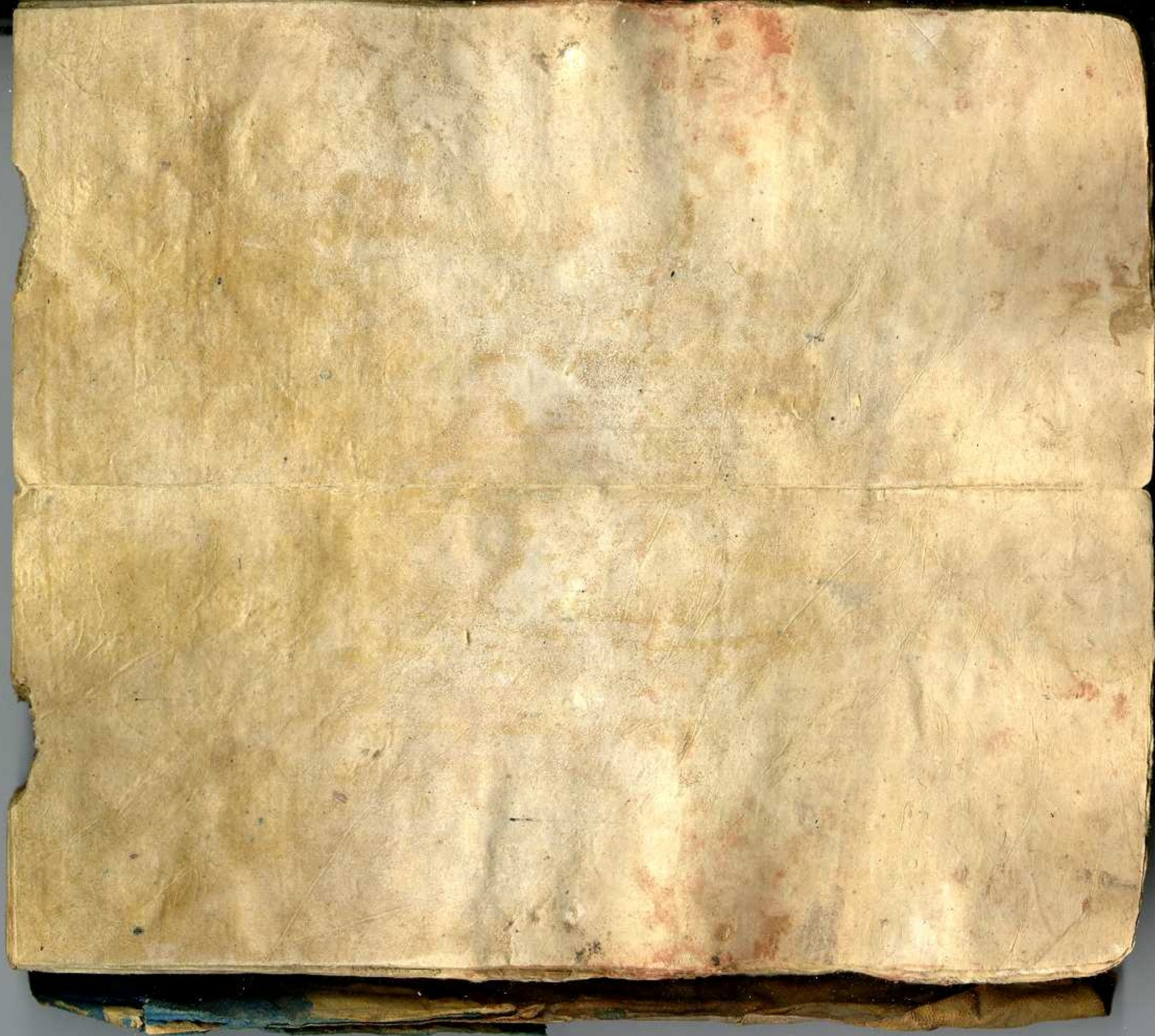


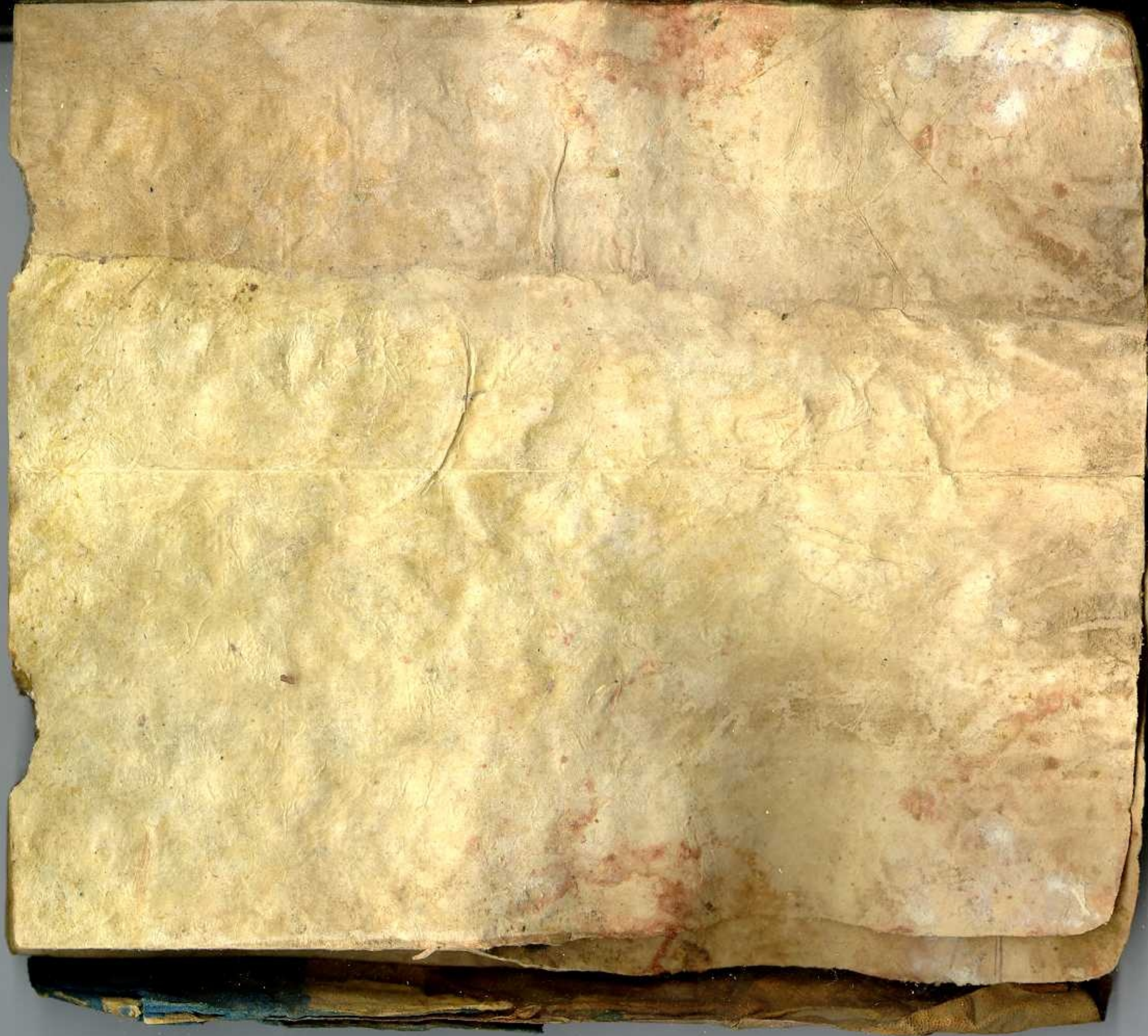












X

X

